स्वामी स्त्रीको चाहै के न चाहै पर नारीको यहधर्महै जु पतिको एक पलहू न बिसारै अरु भर्तारकी मारगारी शृंगार जानै। सो धर्म को पावै औ कुलवंती सती कहावै। धनी घरमें रहै के बाहर पापीहोयके पुण्यात्मा परनारी वाहि न बिसारै क्योंकि स्त्री को अलंकार भर्तार है। पतिहीन अति सुन्दरीहू नीकी न लागै औ तूजारहै। सो तौ पानफूंजके समान एक घरीको पाहुनो दैवके संयोग आनिमिल्यो कर्मकीरेखमेटी न जाय। बिधातासोंकाहूकी कछु न बसाय। अरु वहमेरो स्वामी हौं वाकी दासी। जौलौंवह तौलों मेरोजीवहै। वाकेमरेहौं सतीहोऊंगी। कह्यो है जो सती होय सो प्रथम तौ आपने कुकर्मते छूटै। दूजे कैसेहूं वाकोभर्तार दुष्कर्मी पापी होय तौहू जेते देह में रोमहैं तेते वर्ष वह निज स्वामीको साथ लै स्वर्गभोगकरै। औ जैसे गारडू सांपको मंत्र कीशक्तिकरि पातालते बुलावै तैसेही सहगामिनी अपनेपतिको नरकसों काढ़ि परमगति दिवावै। यह बात सुनि वह खाती आपने जीमाहिं कहनि लाग्यो धन्य मेरे भागजु ऐसी नारिपाई कि आपतरै औ मोहिंतरावै। वह ऐसे बिचारि उछाहको मार्यो उन दोउअन समेत खाटमाथे लै नाच्यो। तातेहौं कहतुहौं कि मूर्ख दोष देखिहू स्तुतिकिये प्रसन्नहोय। पुनि राजाहंसकही आगे कैसी भई। तब बगुला कहनिलाग्यो महाराज उनि दूत बिदा कियो है। सो मेरेपाछे आवतुहै। यह जानि जो बूझिये सोकरौ। या बातको सुनि वा राजाको मंत्री चकवाबोल्यो कि धर्मावतार यह बगुला दुष्टहै। यह काहूको सिखायो आयोहै कह्योहै वैद्य रोगी चाहै पण्डित गुणग्राहक ढूंढै राजा शूर सेवक खोजै अधिकारी ठाकुरको बिग्रह मनावै। पुनि राजाकही याबातको बिचार जो करनो उचितहोय सो करौ। मंत्री कही महाराज प्रथम एक जासूस पठाय उनको कटक औ बिचारजानिये क्योंकि राजाकी आँख जासूसहै। जा राजाके जासूसरूपीनेत्र नाहिं सो आंधरो है अरु जाके आछे जासूसहोयँ सो नरपति घरबैठ्यो सब संसार

की विभव देखै। कह्यो है तीर्थ आश्रम देवालय तौ शास्त्रते जानिये औ गूढ़बात जासूससे। ताते महाराज जो जासूस जल थलमें जासकै ताहि पठाइये। औ अबहीं यहबात गुप्तराखिये। क्योंकि जो मंत्रफूटै तौ आगलौ सावधान होय। यातेहौं कहतु हौं कि नीको जासूस पठाइये युद्ध जीतहोय। राजा औ मंत्री ऐसे बतलाय रहे हैं कि पवँरिया बोल्यो महाराज एकसुआ जम्बूद्वीपते आयो है। सुपवँरिपै ठाढ़ोहै। वाहि कहा आज्ञा होती है यह सुनि राजाने चकवाकी ओर देख्यो। तब चकवा बोल्यो महाराज पहले वाको डेरा दिवाओ। पाछे बूझी जायगी। इतनी बातके सुनतेही द्वारपाल वाहि डेरा देनगयो। बहुरि राजाकही अहो विग्रह तौ उपज्यो। चकवा बोल्यो महाराज मंत्रीको यह धर्मनाहीं जो स्वामीको लड़ावै कै भगावै। कह्यो है विचार कै युक्तिसों बलकरै तौ थोरे पराक्रमहीते कार्य सिद्धहोय जैसे मनुष्य काठ की सांगते भारीपाथर उठावै तैसे नरपतिहू युक्ति किये जयपावै। पुनि कहतु है योंतौ सबहीशूरहैं पर और को बल देखि न डरै मन स्थिर राखै ताहीको बलवान् कहिये। बहुरि जो समय पाय काम करै तौ बेगही सिद्धिहोय ज्यों बर्षाकाल की खेती अरु महत् के गुण स्वभाव ये हैं कि समय बिन दूरिते डरावै। अवसरपाय नेरे आय शूरतन करै आपदा में धीर्य्यराखै सब बातकी सिद्धिमें उतावली न करै। कह्योहै। धीरो पानी पर्बत फोरै महाराज चित्रवर्ण राजा बड़ोबली है। बलवान् के सन्मुख युद्धकरनो योग्य नाहीं जो निर्बल सबलके सन्मुखहोय लड़ै तौ दीप पतंगकी भांति होय। कै जैसे कोऊ चेंटीको पाथर-नमारै तैसे मार्योजाय। पुनि कह्यो है सन्मुख युद्ध करिबे को काल न होय तौ कछुआ कैसे पायँ सकोलि बैठिये। समय पाय नाग कैसो फन निकारिये क्योंकि समयजानि छोटोहू उपायकरै तौ बड़ेको मारै। ज्यों बर्षाकाल पाय नदीको प्रवाह ठाढ़ेरूखको गिरावै। त्योंसमयलहि सब काम हाथ आवैं याते सन्मुख ल-

ड़बेको विचार न करि गढ़ सवाँरिये। तौलों वाके दूतको विरमाय राखिये। कह्यो है कोट ऊपरको एक योधा सहस्रसों लरै। पुनि जा राजा के देश माहिं गढ़नाहिं ताको राज्य शत्रु बेगहीलेय। कोट विन राजा को राज्य स्थिर न रहै। ताते महाराज अब कोट बनाइये। कह्यो है नदी के तीर गढ़ रचिये तरे खाईं खनाइये चारों ओर निविड़बन राखिये। औ पैठबे निकरबे की गैल भांति भांतिके अस्त्र शस्त्र यंत्र गोला भरिये। अरु अन्न रस धन जनको संचय सदा करिये। राजा बोल्यो गढ़ साजबे को काज कौनको देयँ। मंत्री कही जी चतुरहोय ताको देउ। पुनि राजा कही या काज माहितौ सारस निपुण है। प्रधान कही वाहीको दीजिये। बहुरि राजा ने सारस को बुलाय करिकह्यो कि तुम नीकीठौर देखिगढ़ रचौ। उनिकही महाराज मैंया सरोवरको अनेक दिन ते तकि राख्यो है कि याहि माहिं राखि गढ़ रचिये। तौ भलो क्योंकि याके तीर अन्न अधिक होतुहै अरु अन्नहीते सब कछु होतुहै। कह्यो है रत्न औ कांचन सब वस्तुसों उत्तम है पर मनुष्यको अन्नविन न सरै। जैसेनोन विन सब फीको तैसे अन्नबिन कछु न नीको। पुनिराजा ने सारससों कह्यो तुमवेगि जाय गढ़ रचौ। इतेक माहिं पवंरिया आय बोल्यो कि धर्मावतार सिंहलद्वीपते एक काग मेघबर्ण नाम आयो है। सो आपके दर्शनकी अभिलाषा किये द्वारपै ठाढ़ो है। मोहिं कहा आज्ञा होति है। राजा कही काग दूरदर्शी होतु है। याते वाहि राखनो उचितहै मन्त्री बोल्यो महाराज तुम भली कही पर मेरे जान याहि राखनो योग्य नाहीं क्योंकि यह थलकोवासी औ हमारे शत्रु को साथी है। याते याको रहनो क्योंहू नीको नाहिं। कह्यो है जो राजा आपनो पन्थछांड़िपराई चाल चलै सो राजा कूकर दमनक की भांति मरैं। राजा पूंछी यह कैसी कथाहे। तब मन्त्री कहनि लाग्यो॥

एकसमय काहू स्यारको नगरके निकट कूकरनि आनिघेरो

सो भयभान होय भाग्यो औ गावँ में जाय एक नील के कुण्ड माहिं गिस्यो। जब नीलवारेने वाहि मस्योजानि वासों काढ़ि गैलमें डारि दियो तब वह शृगाल भयको मास्यो नगर की गली माहिं मृतक है रह्यो तहां पनिहारियन वाहि पस्यो देखि आपसमें पूंछ्यो आली यह कौन जन्तुहै। काहूने कह्यो वीर यह स्यार है। पुनि एक उनमें ते बोली अरी याको कान काटि बालकके कंठमें बांधै तो डाकिनी न लागै। दूजी बोली बहिन याकी पूंछ काटि मोंढ़ाके गरेमें डारै तौ भूत पिशाच न लागै। तीजी नें झट काटहीलये। तब चौथीने कह्यो याकेदांत तोरि छोहाराकी गूदीमें राखै तौ कछु रोग न होय। यह बात सुनि वा स्यारने आपने मनमें कह्यो कि या गावँके लोग बड़े पापी हैं। कान पूंछकाटि अब दांत तोस्यो चाहतु हैं। याते यहां ते भाजिये तौ बचिये। यह बिचारि वह स्यार हांते पराय बनमें आय शोचनलाग्यो कि अब मेरो नीलवरणभयो। जामेंआपनी प्रभुताहोय सो करौं। यह बिचारि वाने सब स्यारनिको आनि कह्यो कि आज यावनके देवताओं ने निजहाथनि औषधीनते अभिषेककरि मोहिंया बनकोराज दयोहै। तुम मेरो बरणदेख्यो। यहसुनि विनस्यार निवाकोवरण देखिताकी बातमानि सबनि हाथजोरि कहयो किअबजो कुछ महाराजकीआज्ञाहोय सो करैं तब उनि कही तुम सब मेरे पासरहौ। पुनि वेऊ रहनि लागे। ऐसे जब उनि आपनेसजातीनमें आदर पायो तब औरहूबनके जीव बाघ चीताआदि सब आज्ञाकारीभये। पुनिउनि स्यार खेद दये। तद वे स्यार सबजुरि चिन्ताकरि कहनि लागे कि अब कहा करैं। बहुरि तिनमेंते एक बूढ़ोजंबुक बोल्यो अरे तुम जिनपाछिताओ। मैं याको भेदपायो है कि यहगांवमें तौ पूंछ कान कटाय आयो अरु ह्यांआय इंन आपनोनाम राजाकूकर दमनकधरायो ये सिंह चीता अनजाने याकी सेवाकरतुहैं। ताते मैं एकउपायविचास्यो है कि सांझसमय सब स्यार इकट्ठे होय याके सन्मुख पु-

कारो। तब यहहू जातिको स्वभाव न छांड़ि उनमें बैठिबोलिहै। कह्यो है जो कूकरको राजहोय तौहूवह दूटीपनहीं चबाय निज जातिको स्वभाव न तजै। ऐसे बूढ़स्यारकी बातसुनि उनानी वैसेही करी। जब राजा कूकर दमनक नाहर चीतानिमें बैठि बोल्यो तब उननि वाहिमारिखायो। तातेहौं कहतुहौं कि महाराज आपनो पन्थ कबहूं न छांड़िये औ घरकोभेद बातकोमर्म काहूसों न कहिये कह्योहै खोड़रकी आग तरुको जरावै यातेमहाराज विदेशीको भेद कबहूं न बताइये न घरमें राखिये। पुनि राजाकही अहो बांत तौ ऐसेही है परदूरते आयो है। तातेवाहि बुलायकै देखिये। जो राखिबेयोग्यहोय तौ राखिये। नातौ बिदा करिये। चकवा कही महाराज अब तिहारो गढ़ साज्योगयो। चित्रबरण राजाके दूतको बुलाय बिदाकीजै। कह्यो है भूपाल और भूपालके बसीठते एकल्लौ न मिलै। तासों आपनी सभा के लोगनको बुलाय बैठारिये। तब सुआको बुलवाइये अरु वाके साथ कागकोहू। यहसुनि राजाने वैसेहीकरि विनदोउनको बुलाय आसनदै बैठायो। तब शीशझुकाय कीरबोल्यो अहोहिरण्यगर्भ राजाधिराज तुमको श्रीमहाराज राजाचित्रवरणनेकह्यो है जो आपनो प्राणराख्योचाहौ तौ हमारी शरणआवो नातौ आपने रहनिको अन्त ठौरकरौ। यहबात सुनि राजाहंस क्रोध करि बोल्यो हैरेकोऊ जो या बसीठको मारै। इतेकसुनि वहकाग बोल्यो महाराज मोको आज्ञाहोय तौ यादुष्टको मारौं। चकवा कही धर्मावतार दूत राजाको मुखहै। तातें याको कछुदोष नाहीं जैसे हां सुनी तैसे हयां आनिकही। यह मिथ्या न भाषै अरु बसीठके कहे कछुआपनी हानिनाहिं औवाकीप्रभुतानाहिं तासों याको मारनो काहूभांति उचितनाहिं। कह्यो है जासभामें बूढ़ो नहोय सो सभा न शोभै। सो बूढ़ो नाहिं जो धर्मनजानै। वह धर्मनाहिं जहांसत्यनहोय। वह सत्यहूनाहिं जहां दया नउपजै। ऐसे समझायमंत्रीने राजाको क्रोध निवारणकियो। पुनि तोता

ह्वांते उठिचल्यो। तद मंत्रीने वाहि मनाय बैठायो औ वस्त्र अ-
लंकारदिवायराज़ाते बिदाकरायो। जब वह आपने राजाके
पासगयो तब राजा चित्रबरण ने वाते पूछी शुककहौ वह देशकै-
सोहै सुआ कही महाराज पहिले युद्धकी सामाकरौ। पाछेहौं कह-
तुहौं राजा बोल्यो हमारे लड़ाई को सबसामान इकट्ठो है तुम
कहौ। पुनि सुआ कहनि लाग्यो महाराज कर्पूरद्वीप सातवें
स्वर्गसमानहै अरु मोपै बरन्यो नाहीं जातु यहसुनि राजाने आ-
पने सब मंत्रिनको बुलायकेकह्यो अहोकीर कहतुहै कि राजा
हंसते युद्धकरौ। सो तुमते पूंछतुहौं कि अब कहाकरनो उचितहै
अरु मेरोहू मनोरथ यह है कि युद्धकरौं। कह्यो है असंतोषी
ब्राह्मण लाजवती वेश्या कुलवती निर्लज्ज औ राजा संतोषी
होय तौये सब थोरेई दिनमाहिं नष्टहोयँ। यहसुनि राजाकोमंत्री
दूरदर्शी नामगीध बोल्यो महाराज आपने मंत्री मित्र कटकप्रजा
आदि सब एकमत होयँ अरु शत्रुके मित्र मंत्री अरु प्रजामेंविरुद्ध
होय तौ युद्ध करिये। यहनीतिहै। राजा कही मेरोदल मैं सब
देख्यो यह खानिवारो है पर काहू कामको नाहिं। याते तुमबेग
ज्योतिषीबुलाय मुहूर्त देखौ गीधकही पृथ्वीनाथशीघ्रहीयात्रा न
बूझिये। कह्योहै शत्रुबिनबिचारेवाकी भूमिमें जाइये तौ नान्हौं
हूबड़ेको जीतै। पुनि राजा कही जो पर भूमि लियो चाहै सो
कौनभांति ते लेइ। यह तुमकहौ। मंत्री बोल्यो महाराज उद्योग
करे मनकामना पूर्णहोय। अरु बिन उद्योग कछू न होय जैसे
औषधि खाये रोगजाय वाको नाम लिये न जाय। अब महा-
राजकी आज्ञा प्रमाण पर भूमिलैबेकी रीति कहतुहौं जो राज-
नीतिमें कही है प्रथमतौ राजा आपने मंत्री योद्धा महाजन
मुखियानको बुलाय सन्मानकरि साथलेय। अरु शस्त्रबस्त्रअलं-
कार धनगज घोड़ानिजलोगनको बाटै जो जाके योग्यहोयता-
को तैसो सन्मान करै। पाछे कटक सांथलैचलै अरु जहां पर्वत
बन डरकी ठावँ होय तहां सेनापति कटक इकट्ठोकरि चलै। भले

भले शूर साथराखै और रनिवास ठाकुर भंडार नान्हें लोग ब्योपारी बीचमाहिं। पुनि राजा औ मंत्री सबपै दृष्टि राखै औ बनबासी पर्वतनिवासी लोग आगे धरलय। बहुरि जहां बिषमभूमि होय कै वर्षाकाल होइ तौ राजा हाथीपर चढ़िचलै। कह्यो है गजकी देहमें आठशस्त्रहैं। चारपावँ द्वै दाँत एकशूंड औ माथो याते राजा हाथी अधिक राखै तौ भलो क्योंकि गयन्द चलतो कोटहै अरु जो घोड़ानिपै चढ़िलड़ै तिनतेंदेवताहू डरैं। औपयादेनको बलसदाराखै। पुनि परभूमिमें जाय राजा सदा सावधानरहै। काहूको बिश्वास कबहूं न करै योगेश्वर-की नींदसोवै। अरु राजा आपने साथ द्रव्य राखै क्योंकि धन प्राणतुल्यहै। बिनधन प्रभुतानाहीं। लक्ष्मी पाय को न जूझै। मनुष्यद्रव्यके हेतुसेवाकरतुहैं। कह्यो है नर धनते बड़ो औधनहींतेंछोटोपुनि शत्रुको देशलूटि खसोटि कै उजारै क्योंकि ताते अरि दुचितो होय। अरुवाको अन्न रसईंधन न्यार जो पावै सो लूटि ल्यावै। और गढ़गढ़ी सर कूपबापी फोरि नाखै बन उपवन बारी काटिडारै। ऐसे अनेक अनेक भांति की पीड़ा शत्रुको उपजावैऔ आपने लोगनिते सदा प्रसन्न होय बतलायो करै जाते लोगजानैं कि हमारो स्वामी हमसों संतुष्टहै। कह्यो है ठाकुरके सन्मान औहितबचनते जैसोसेवक काजकरैतैसो धनदिये अरुकटुबचन ते न करै। पुनि जब सेवक काजकरि आवै तब वाहि प्रसाददेय अरु जो प्रसाद न देय तो वाकी जीविका दूनी करिदेय। औ यहू न होय तौ ताकोकमायो पैसा चुकायदेय। अरु जो स्वामी सेवकको महीनादेत आजकाल्हि करिटारैताको किंकिर उदास रहै औ समय पर कानीदेय। ताते जो राजा शत्रुको जीत्यो चाहै सो दासनि औ सेवकनि को प्रसन्नराखै तौ जहांजाय तहांबिजय पावै अरु या बातको सुनि अरिके सेवक भूखे टूटेहोयँ ते आपते आप आयमिलैं तो लरनोहू नपरै। बहुरि रिपुके जीतबेको एकबड़ो उपायकह्यो है कि वाकेभाई भानजे भतीजानसोंभेद उपायकरि

तिनको आदरमान कीजै। अरु मंत्री प्रजाहूको अपनाय लीजै। औ जे लरैं तिनको नाश कीजै। अरु जे शरण गहैं तिनको भय मिटाय दीजै। अरिको देश उजारिये आपनो बसाइये शास्त्र में कह्यो है या प्रकारते राजा चलै तो युद्धजीतै। पुनि राजा बोल्यो मैं जान्यों। जाते आपनीजीत औशत्रुकीहारहोयताकी यहरीति है। पर शास्त्र के पैंड़ेते मनकी उमंगको पंथ न्यारो है। मनकी उमंगमें जो शास्त्र बिचारै तो न बनै जैसे अन्धकार और तेज इकट्ठो न रहै। इतनो कहि राजा नें ज्योतिषी बुलाय शुभमुहूर्त ठहराय भली लग्न में दिग्विजय यात्राकरी। तब राजा हंसके दूतने आय अपने राजा सों कही कि महाराज राजा चित्रबरणने मलयाचलके हेठआय डेरा कर्यो। तुम अपने गढ़की रक्षाकरौ औ आपनो परायो चीन्हो। वाको मंत्री अति अति चतुरहै। मैं वाकी बातसों जान्यौं कि उनिहमारो गढ़लैन को आपनो मित्र काग पठायो है। बहुरि राजा हंसको मंत्री चकवा बोल्यो महाराज या कागको न राखिये। राजा कही जो यह काग वाकोपठायो होतो तो वासुवाको मानिन न उठतो अरु उनि तोता के गये पाछे युद्धको मतो कियोहै। यह बातैं प्रथम आयो हो। मंत्री बोल्यो महाराज तऊ नये आयेते डरिये। राजाकही अहो जो नयो आयो आपनो उपकारकरै ताहि मित्रजानिये। अरु बन्धु मित्र होय आपने कामन आवै ताहि शत्रुकरि मानिये। जैसे बनकी औषधी तुरतकी आई रोगीके रोगको दूरकरि सुखदेय तैसे कोऊ कोऊ मनुष्य नयोआयो उपकार करि यशलेय पुनि ज्यों शूद्रकराजाके बीरबर सेवकने अल्पदिननिही में सहायताकरी। चकवा बोल्यो महाराज यह कैसी कथाहै। पुनि राजा कहतुहै॥

शूद्रकनाम एकराजा। वाकीक्रीड़ाको एक सरोवरतामेंकर्पूरकेलि नाम राजा हंसहो। वाकी बेटीकोनाम कर्पूरमंजरी। तापै आसक्तहोय मैं ह्वांरह्यो। तहाँ बीरबरनाम एक राजपूत काहूदेशते उद्यमके लिये आय राजद्वारपै ठाढ़ोभयो। अरु उनि पौरियनते

कह्यो मोहिं राजाते मिलाओ। हौंसेवाकरनिके हेतुआयोंहौं द्वारपाल यहबात राजासों जायकही। तबराजाजे वाहि बुलायकै पूछयो तुमादिनप्रति कहालेउगे। उनिकही चारसौतोलासुबरण। पुनि राजा बोल्यो और तिहारे साथकोहै। उनिकही द्वै हाथतीजौखड्ग। राजाकही इते कहमते न दियो जायगो। यह सुनिबीरबर जुहार करि चल्यौ तद मंत्रीने राजासों कही महाराज चारि दिन तौ याहि सुबरण देराखिये औ याको पराक्रमदेखिये इतेक योग्यहैकैनाहिं। मंत्रीकीबातमानि राजाने वाहिमोनादै राख्यो। वादिनको कंचनलै वाने आपने घरजाय आधों तौ ब्राह्मणनिको संकल्प करिदियो अरु वाको आधो भूखभिखारीभिक्षु कनकोबाँटि दियो औएकभागनिजभोजनार्थराख्यो।याहीभांतिवहपुत्रपुत्रीस्त्रीसहितह्वै रहनिलाग्यो। जबसांझहोय तबखांड़ौफरीलैराजसे वामेंजाय इपस्थितहोय। एकदिन कृष्णचतुर्दशीकी आधीरात कों घनघुमड़िमेहमढ्यो।तासमयकाहूनारीकेरोवनकोशब्दसुनि राजाबोल्यो कोऊहै। बीरबर कही महाराज कहा आज्ञा होतिहै। राजाकही देखतौ को रोवतुहै। राजाकीआज्ञापाय वीरवरचल्यो। तब राजाने आपने मनमें बिचारयो कि मोहिं ऐसो न बूझिये जु या अँधेरी रैनमाहिं रजपूतको एकल्लो पठाऊं। ताते याके पाछेपाछे जायदेखौं तौ सही यहकहा करतुहै। या प्रकार राजा मनमें बिचारि ढालतरवार गहि वाके पाछे ह्वैलियो। आगेजाय बीरबर देखै तो एकनारी नवयोवना अति रूपवती सबआभरण पहिरे ठाढ़ी धायमारिमारि रोवतिहै। इन वासों पूंछी तू कोहै। उनिकही हौं राजलक्ष्मीहौं। पुनि इनकह्यो तूरोवतिकाहे। उनि कही मैं बहुतदिन या राजाकी भुजानिकी छाँहमें बिश्रामकियो अरु अब या राजाको छांड़ि जाऊंगी। या दुःखते रोवतिहौं इन कही तूकाहूभांतिहू रहै। उनिकही जो तूनिजपूतकोबलिदेइतौ हौंरहौं अरु यह राजा अनेक दिन अखण्डराज्यकरै पुनि बीरबर कही माता जौलौं मैं आपने घर ह्वै आऊं तौलौं तुम ह्यां

रहौ। ऐसे कहि घरजाय बीरबर पुत्र औ स्त्री को जगाय लक्ष्मी के कहे बचन कहिबे लाग्यो। तो पुत्रीहू जागी। यहबात सुनि सबचुपरहे तद पुत्रबोल्यो धन्यभाग्यमेरो जु यह देह देवीके निमित्त लागै अरु स्वामीको काजसरै। यामें पिताजू बिलंब जिन करौ क्योंकि कबहूं तौ या कायाको बिनाश होय। तातें काहूके काजलागै सोतो भलोहीहै। कह्यो है जाको बिद्या, धन, प्राणपराक्रम पराये कामआवै ताहीको संसारमें जन्म लेनो सुफलहै। पुनि वीरबरकी पत्नी बोली जो तुम यहकार्य न करौगे तो राजा के ऋणते कैसे उतरन होउगे। ऐसे बतराय सब देवीके मन्दिर पैगये अरु पूजाकरि हाथजोरि इतनौ कह्यो माता हमारो राजा चिरंजीवि होय राज्यकरै। यह कहि पुत्रको मूड़ काटि बीरबरने देवीको दयो अरु आपने मनमाहिं कह्यो कि राजाके ऋण ते तो उतरनभयो। पर अब निपूतोहोय जगत में जीवनो उचित नाहिं। यह समुझि आपनोहू शीश काटिभवानीके आगूधर्यो। उनदोउअनको मार्यो देखि वाकी स्त्रीने बिचार्यो कि संसारमें रांड़ निपूती है जीनो योग्य नाहीं। ऐसे ठानि वाहूने निजमाथौ चढ़ायो। बिन तीननिको मर्यो देखि वाकी पुत्रीने बिचार्योकि निगोड़ी नाठी है जगमें जीवनो भलोनाहिं यह समझि विनहूं मस्तक काटि देवीके सन्मुख राख्यो। यह चरित्र देखि नरपतिने जीमांहिं बिचार्यो कि मोसे जीव अनेक पृथ्वीमें उपजतु खपतु हैं पर ऐसे शूरनर होने कठिनहैं। ताते अब याको कुटुम्बनाशकरि मोहिंराज्यकरनो योग्यनाहीं। यह शोचिसमझि ज्योंभूपालनिज मूड़ उतारनि लाग्यो त्योंहीं देवीने आय करगह्यो अरुकह्यो राजातू साहस जिनकरै। अबतेरे राजमें भंगनाहिं। राजाकहिमाता मोहिं राज्यते कछु प्रयोजननाहिं पुनि देवी बोली हौं तेरे धर्म औ सेवक के. कर्म पर संतुष्ट भई। अबतू जो बर मांगै सोदेऊं। राजाकही मा जो तुम संतुष्टभई हौ तौं इन चारनको जीवदान देव। जब उन पाताल ते अमृत लाय विन चारन को जिवायौ

तब राजा चुपचाप हांते चलि निज मन्दिर में आयो। और बीरबरहू उन तीनों को घरराखि आप राजाके समीप पहुंच्यो। नरपतिनेवाहि पूंछयो तुमगये हे तहां कहा देखिआये। पुनि करजोरिउनकही महाराज एकनारी रोवतिही। जौलौं हों वहांगयो तौलौं वह चुपरही। मैं वाहि न पायी। पुनि मैं बगदि आपके ढिग आयौ। ऐसे सुनि राजानेमनमें कह्यो कि यह कोऊ बड़ो सिद्धपुरुष है। याकी स्तुतिहौंकहांलौंकरौं।कह्योहै दयावन्त दानीतपस्वी सत्यबादी औ शूर जो आपनी बड़ाईन करै तो वाहि सिद्ध पुरुष जानिये। आगे राजाने प्रात भये पण्डितनकी सभा में बैठि रात्रिको सब वृत्तांतकह्यो अरु संतुष्टहोय बीर बरको करनाटक देशको राजदयो। तातेहौं कहतुहौं सबनयेहू बुरे न होयँ। संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होतु हैं उत्तम मध्यम अधम। बहुरि चकवा बोल्यो महाराज यह काज करिबे योग्य नाहिं। आगे महाराज की इच्छा। कह्यो है पराई रीस पण्डित चतुर कबहूं न करै अरु जो करै तो वैसेहोय जैसे एक क्षत्रीने आपनी तपस्याते धनपायो औ वाकी रीसकरि एकनाऊने निज प्राण गँवायो। नरपति कही यह कैसी कथा है। तब चक्रवाक कहानि लाग्यो। अयोध्यापुरी माहिं एक चूड़ाकरण नाम क्षत्री रहै।तिन धनके निमित्त अतिकष्ट करि श्रीमहादेव जूकी सेवाकरी।तब सदाशिवजीने वाकोस्वप्नमें दर्शनदै कह्यो।अरेआज पाछलीरात्रि समय चौर होय स्नान करि लौठियाकरधरि आपनी पौरिमाहिं कपाटके पाछे लुकिरहियो। जबकोऊ भिक्षाको आवै तब वाहि लकुठियनमारि घरमाहिं लहियो। वह सुवर्ण भर्योकलश ह्वै है। तातें तू जबलग जीवैगो तबलग सुखीरहैगो। यह बरपाय बिन दूजे दिन नाऊको बुलाय वैसेही कियो जैसै भोलानाथने कह्यो हो जब वह भिखारी सुवर्ण घटभयो तब इनलै घरमें धर्यो यह चरित्र देखि वा नौआनें बिचार्यो कि धन पाइबेकी जो यही रीति है तोहौंहू क्यों न करों ऐसे समझि निज घर आय उनहूं

एक संन्यासी मास्यो। तदवाहि राजाके सेवकनि पकरिलैजाय संन्यासीके पलटै मास्यो। तातेहौं कहतुहौं कि और कीरीसक- बहूं न करिये। पुनि राजाकही पाछली बात जिनकरो। आगे जो करनो होय सो करो। मलयापर्वतकेतरे राजा चित्रबरणको डेरा है अब कहाकरिये सो कहो। मंत्री बोल्यो महाराज हमहूं सुन्यो है कि वह लरिबेको आयो है।.परतुम कलु चिन्ता जिन करो। हम वाहि जीति हैं क्योंकि वाने आपने मंत्री को कह्यो नाहीं मान्यो कह्यो है कि जो शत्रु लोभी मूढ़ आलसी कायर झूंठो औ अधीरहोय अरु धन राखि न जाने काहूको कह्यो न मानै ताहि बिन कष्ट मारिये। महाराज जोलौं वह हमारो गढ़ नगर कटक औ घाट बाट न देखै तौलौं वाके मारबे को सेना प ठाइये। ऐसे औरहूं ठौर कह्यो है कि दूरको आयो थक्यो भूखो प्यासो भयमान असावधान रात्रिको जाग्यो औ पर्वत तरे बस्यो होय ऐसे शत्रु को दौरिमारिये। यातेउचितहै कि अबहीं हमारो सेनापति वाके दलको जायमारे तो भलो। यहबात मंत्रीते सु नत प्रमाण राजाने सेनापतिको टेरिआज्ञादई कि तुम याही समय राजा चित्रबरणकी सेनाको जायमारो। उनवैसेहीकरी। जब चित्रबरणके योधा अनेक मारेगये तब वह चिंताकरनिला ग्यो। पुनिवाको मंत्री गीध बोल्यो अब काहे चिंताकरतुहो। ब हुरि राजाकही बाबाजू अब काहूभांति हमारीसेनाकी रक्षाकरो ऐसे भयमान राजाको देखि गीधबोल्यो महाराज कह्योहै कि ग र्व्वते लक्ष्मीटरै बुढ़ापो पौरुषहरै चतुरसंदेह मिटावै अभ्यासकरै विद्याआवै न्यायप्रताप बढ़ावै बिनयते अर्थपावै अरु मूर्ख राजा होयतौ पण्डितनकी सभाते शोभा। जैसे नदीकेतीर रूखहस्यो रहै तैसे अच्छीसभाते राजाको मनहूडहडह्यो रहै इतनो कहि पुनि गीधबोल्यो महाराज तुमने आपनो कटक देखि गर्व्वकरि साहसकियो अरु मेरोकह्यो नमान्यो ताअनीतिकोयहफलहै। कह्योहै जो राजा मंत्रचूकैतौ ताको नीतिको दोषहै जैसेकुपथ्य

ते रोगहोय रोगतेमरै तैसे धनतेगर्व्वहोय औ गर्वते दुःख। पुनि निर्बुद्धीकों शास्त्रयोंज्यों आँधरेकेहाथ आरसी। यहसमुझिहम हूं मौन गहिरहे। इतेक बातें सुनि राजाने हाथजोरि गीध सों कही बाबाजू मोते अपराधभयो। छमाकीजै अरु अबकाहूभांति जो कटकबच्यो है ताहि साथलै निज घरकी बाटलीजै। पुनि गीध कही महाराज ऐसो कह्यो है कि राजा गुरुब्राह्मणबालक वृद्ध स्त्री रोगी इनपैज्योंक्रोधउपजै त्योंहीं जाय। ताते तुम डरो जिन धीर्यधरो। कह्यो है मंत्रीताहीकों कहिये जो बिगरोकार्य सुधारै औ बैद्य सों जो सन्निपात निवारै। याते तुमकछु चिंता मति करो। हौं तिहारे प्रतापते वाको गढ़तोरि कटक समेत आनन्द सों घरलै चलिहौं राजाबोल्यो थोरो कटकरह्यो। अब गढ़ कैसे बिजय करिहो गीधकही महाराज जो संग्राम जीत्यौ चाहो तो बिलम्ब जिनकरो। आजही चलि वाको कोट छेकिये। यहबात सुनतही बगुला ने राजा हंसते जाय कही कि महाराज राजा चित्रबरण थोरेही कटक ते तिहारो गढ़ छेक्योचाहत है। यहबात मैं वाके मंत्री ते सुनिआयोहौं। यहबात सुनि राजहंस ने आपने मंत्रीसों कह्यो किअब कहाकरिये। चकवा बोल्यो महाराज आपनो कटक देखोयामें कौनभलो है औकौन बुरो। भलोहोय ताहि धन बस्त्र घोड़ा हाथी शस्त्रदीजै औबुरो होय ताहिगढ़ कटकतें बाहरकीजै। कह्योहै जुराजा एकसमय तो दामको लाखकरिमानैअरु एककाल लाखकोदामकरिजानै तो वा राजाको लक्ष्मी न छांड़ै। पुनि यज्ञ दान बिवाह आपत्य औ शत्रु मारिबे में जो धन उठावतु है सोई स्वार्थक है अरु मूर्ख थोरेदैन ते डरि सबही गँवावै। राजा बोल्यो तुमको ऐसी कहां की आपदा है। मंत्री कही महाराज कह्यो है जुलक्ष्मी रिसाय तो आयो धनजाय। ताते दान कीजिये जो धर्मके आधीन ह्वै लक्ष्मी रहै बहुरि राजनीति में हूं कह्योहै कि बिग्रहके समय राजा आपने योद्धन को समाधानकरै जो जैसो ताको

तैसो। क्योंकि जे उत्तम, प्रवीण कुलीन, शीलवन्त, शूरबीर, धीर, नीके पोषेहोयँ ते पांच पांचसौते लरैं। अरु कुलीन, अप्रवीण, अधम, अधीर, कायर, निर्लज्जहोयँ ते पांचसौ पांचते पराये। महाराज पुनि जा राजाको मंत्री असावधान होय ताकोहू राज न रहै अरु जो राजा आपनो परायो न जानै मंत्रीकी प्रतीतिन मानै सेवककोसुखदुःखन गनै सो राजाकबहूंनिश्चिन्त न रहै। औ जो राजा आपनोपरायो बूझै सेवकको दुःख सुख बिचारै ताके लिये सेवक धन, तन, प्राणदे सहायताकरै। राजा औमंत्री ऐसेबतराय रहे हे कि ताहीसमय मेघवरण काग आय जुहारकरि बोल्यो महाराज शत्रु युद्धकरिबे को गढ़के बार आयो है। मोहिं आज्ञाहोय तौ बाहर निकरि संग्रामकरौं अरु आपके लौनते उतरन होऊं। मंत्री कही बनते न निकस्यो सिंह अरु स्यार समानहैं। याते गढ़तेंनिकसिये कह्योहै जो राजाआप ठाढ़ोरहि युद्धदेखै तो कायर सिंह समानहोय लरैं। ताते अबहीं कोटेक बारजाय युद्धकरनो योग्य नाहिं। इधर तो राजा औमंत्री ऐसेबतराय रहेहे। अरु उत चित्रबरण राजाने दूजेदिन गीधसों कह्यो कि बाबाजू जो प्रतिज्ञाकरीही तांको निर्बाहकरो। गीध बोल्यो सुनो महाराज। आगरेके थोड़े योद्धाहोयँकै राजामूर्ख औ मंत्री कायरहोय तो गढ़ उतावलो टूटै। सो तो वहां एकौगति नाहिं। ताते ह्वांकेलोगनिते भेद उपायकरिये कैंघे रोनाखि अन्न रसरोकि सबमिलि साहसकरैं तो गढ़पावैं। कह्योहै जैसोबलहोय तैसो यत्नकरिये। इतनो कहि पुनि मंत्रीने राजाके कानमें कह्यो कि महाराज कछु चिन्ता जिनकरौ हमारो काग वाके गढ़में है। सो कामकरिहै। आगे प्रातहोत राजा चित्रबरण सबसेनाले गढ़ की पौरिजाय लाग्यो। उत समयपाय कागलायलगाय गढ़लियो लियो करि पुकारची। तब तहांके जीवनके पंगछूटे। वे सबदौरि पानीमें पैठे औ राजाहंससुकुमार ताते पराय न सक्यो। तद एक सर्वमित्रनाम कूकड़ो राजा चित्रबरणको सेनापति। तिन आय

हंसको छेक्यो। तब सारसवाके सम्मुख होनि लाग्यो। तहां हंस बोल्यो तुम मेरेनिमित्त जिनजूझो। हौ ह्यांरहौं। तुम मेरे पुत्र चूड़ामणिको लैजाय राज्यकरो। सारस कही महाराज आपऐसी बात जिनकहो। जौलौं चन्द्र सूर्य तौलौं तुम अखण्डराज्यकरो। हों आपके प्रतापसों गढ़में सब शत्रुनमारि बिछावतुहौं। कह्यो है क्षमावन्त, दाता, गुणगाहक, सुखदायक, धर्मात्माठाकुर कहां पाइये। राजाकही भक्तिवंत निष्कपट चतुर सेवकहू कहां पाइये पुनि सारसबोल्यो महाराज संग्राम तजि तो भाजिये जो मृत्यु न होय। अरु जो निदान मृत्युहीहै तो आपनोयश मलीन करि काहे मरिये। बहुरि जो या अनित्य शरीर सों जगत् में नित्य-यश पाइये तो याते कहा उत्तम है। यामें तुम तो हमारे स्वामीहीं हौ। राजाकही यह तुम भली बिचारी। हमहू ऐसोही करिहैं। सारसबोल्योमहाराज आपऐसोबिचार जिनकरो क्योंकि स्वामीके देहछांड़े प्रजा अनाथहोय अरुसेवकको तो यह धर्महीं है कि जौलौंबनै तौलौं स्वामी के राखिबेको यत्नकरै। स्वामीके उदयतै याको उदय अरु अस्ततै अस्त। इतनीबात कहत कहत जब कुकुटने राजा हंसको आयगह्यो तब सारसने वासोंछुड़ाय पीठपर चढ़ाय नीरमें जायछोड़्यो अरु आप आय अनेकन को मारि गढ़माहिं जूझिमरयो पुनिआय राजा चित्रबरण ने सब गढ़की मायालई अरु बन्दीजन के पांयनकी बेरी हथकरी काट-दई। इतनी कथासुनि राजपुत्रनि विष्णुशर्म्मा ते कह्यो अहो गुरुदेव राजाहंसके सेवकनिमें वह बड़ोकोउ हो जिन राजाको बचाय आप प्राणदियो विष्णुशर्म्माबोल्योमहाराजकुमार सुनो। उन बड़ो कार्य कियो। देखो एक तो संसार में यशपायो दूजे स्वर्ग। कह्यो है जो सेवक स्वामीके लिये रणमें प्राणदेइ सो परमगति पावैऔ जोसाथ छोंड़ि भाजै वह नरकमें पड़ैऔ जगत् माहिं कलंकी होय॥

अथचतुर्थकथा आरम्भ ॥

विष्णुशर्म्मा बोल्यो महाराजकुमार तुमनि बिग्रह तो सुन्यो। अबहीं संधिकथा कहतुहौं कि जब दोऊराजा संग्रामकरि सैना कटायरहे तब गीध अरु चकवाने जाभांति उनको मिलायो ताई रीति सब कथा कहतुहौं। राजपुत्रनि कही अहो गुरुदेव हमनी के चित्तदै सुनतुहैं। आप आज्ञा कीजै। पुनि विष्णुशर्म्मा कहनि लाग्यो कि जद राजाहंस ने चकवासों पूंछ्यो कि तुम यह जानतुहौ गढ़मेंआग हमारे लोगनिलगाईकै शत्रुके। तदचकवा बोल्यो महाराज तिहारो मेघवर्ण कागदीसतुनाहीं। ताते जान्यो जातुहै कि होय न होय यह वाहीको कामहै। इतनी बात सुनि राजा चिन्ता करि कहनि लाग्यो कि मैं जान्यों यहकाम मेरेही अभागते बिगस्यो। यामाहिं कछुतिहारोदोषनाहिं। मेरेकपालही को दोषहै। मंत्रीकही महाराज औरहूठौर ऐसे कह्योहै कि जब देवकोपतुहै तबमनुष्यपर आपदा आवतुहै। अरुकर्मके बशहोय अनीति करै हितूनको कहो न मानै जैसे एक कछुआने आपने हितूनको कह्यो न मानि काठतेगिरि दुःखउठायो। तैसे कष्टपावै राजाबोल्यो यह कैसी कथाहै। तहां चकवा कहनिलाग्यो ॥

मगधदेशमें फुल्लोत्पलनाम सरोवर। तहांबिकट संकटनाम द्वैराजहंस रहैं। तिनको मित्र एककम्बुग्रीव कछुआहू वहां रहै। एकदिन तहां धीवरआये अरु आपसमें बैठि बतराये कि आज रात्रिको यहां बसि माछरी कछुआ पकरिहैं। यह सुनि कमठ ने हंसनिसों कही मित्रतुम धीवरकी बात सुनी। अबहीं यहांनरहिहौं और सरोवरमें जैहौं। हंसनि कही अबहीं रहौ। आगेउपाय करिहैं। कछुआ बोल्यो बंधु तुम जो कही कि आगेउपायकरिहैं सो आगेकी बात नाहिं। कह्योहै आपदा बिनआये उपायकरै तो सुखपावै औरन करै तो दुःखउठावै जैसे यद्भविष्यमाछरीने दुःख पायो। हंसानिकही यह कैसी कथाहै बहुरि कमठ कहतुहै ॥

पंहिले या सरोवरपर एकबार धीवर आयोहो। तब यहां तीन माछरी रहतिहीं। एक अनागत विधाता दूजी उत्पन्न मतितीजी यद्भविष्य। जब धीवर आयो तब अनागत विधाताने कह्यो अब यहां रहनो उचितनाहीं। इतनो कहि वह और सरोवर में गई। दूसरीबोली जद कार्य आयपरिहै तद उपाय करिहौं। कह्योहै जो उपजी बातको उपायकरै सो चतुर जैसे एकबनियांकी बेटीने पतिके देखत जारको चूम्बादे मिसकियो। तीसरीने पूंछ्यो यह कैसी कथाहै पुनि उत्पंन्नमति कहतिहै॥

विक्रमपुरमें समुद्रदत्तनाम बनियां। ताकी स्त्रीको नाम रत्न मंजरी। सो आपने सेवकसों रहै। कह्योहै स्त्रीके कौनबड़ो कौन छोटो। अपने कामसों काम। आगे एकदिन वह आपने सेवक को मुख चूमतही। वाहीसमय वाके स्वामीने आयदेख्यो। तब उनि दौरि पतिसों कही साहजू या सेवकबेजमारेको घरमाहिं जिनेराखो। या दईमारयो चोरहै। अबहीं यामे घीचुराय खायो मैं याको मुहँसूंघ्यो। सुघृतकी गंधआवतिहै। यहबात सुनि सेवकरूठ्यो अरु कहन लाग्यो कि जाघरकी धनियानी मुखसूंघै तहां रहनो भलो नाहीं। पुनि समुद्रदत्तने उनदोउनको मनायो। तातें हौंकहतिहौं कि आपत्यसमय जाकी बुद्धिफुरै सोई चतुर। बहुरि यद्भविष्य बोली जो भावै सो होय। चिन्ताकोकरै। आगे धीवरनेआय जारवा सरोवरमें नाख्यो अरु वे दोऊ बझीं। तब उत्पन्न मति मृतक ह्वै रही। वाकोमरयोजानि धीवरने जारते बाहर काढ़िराख्यो। पुनि अवसरपाय वह पानीमाहिं जायगिरी यद्भविष्यको भावीको भरोसोहो। सो धीवरके बशपरी। तातें हौंकहतुहौं जो अनागत बिधाताकी भाँति उत्पाततें पहिलेभाजै सोभलो। बहुरि हंसनिकही तुम कैसे चलिहौ। उनिकहा मित्र तुम दोऊ एकैलकड़ी दोऊघांते पकड़ो औहौं बीचते गहौं। तब लैउड़ौं। पुनि हंसबोले बन्धु तुम नीकीकही। पर हमारे जान जैसे बगुलाके उपायते बालकपन लवायो तैसे तुमहू करतुहौ।

कमठ कही यह कैसी कथा है। तहां हंस कहनि लाग्यो॥

उत्तरदिशाकी गैलमें कावेरीनदी के तीर गन्धमादनपर्वतपै एकरूख। तापर एकबगुलारहै। वाकेनीचे बांबीतामें कारोनाग। जब वह बकअण्डादेइ तब सांप रूखपरचढ़ि खायलेइ। एक दिन वह चिन्ताकरि रह्योहो कि काहूबूढ़े बगुलानेवासों पूंछ्यो कि रेतू ऐसो दुचितो क्यों है। इनवासों सबभेद कह्योतदउनि कह्यो कि अरे तू एकउपायकर कि बहुतसी माछरी ल्याव औ न्योरेके बिलते लै सांपकी बांबीलौं पांतिसी लगाव। जबवह मछरी खातखात आयहै तब वा सर्पहूकोखायहै। यहबात सुनि उनि वैसेहीकरी और न्योरेने आय नागकोखायोपरसाथहीपेंड़ पै चढ़ि वाके अण्डाहू खाये। ताते हौं कहतुहौंकि ऐसोयत्नजिन करो जामें आपनो विनाशहोय। जो तुम लकड़ीपकरि लटकि चलौ औ कोऊ कछूकहै वा बेर तुम रिसायकै उत्तरदेउ।औमुहँते लकड़ी छूटै औ नीच गिरो तो हम कहाकरें सोकहो।उनिकहीहौं। कहा बावरोहौं जुबोलिहौं। इननिकही भाई तुम जानों। इतनो कहि वे दोऊ हंस वाको वहीभांति लैउड़े कछुआको लौठिया में लटकतदेखि अहेरी बोले। देखौ रेया कछुआको। द्वैपक्षी लिये जातुहैं। एक बोल्यो जो यहगिरिपरै तो भूंजिखाऊं। दूजेने कही मैं घरलैजाऊं। यह सुनि कछुआसों रह्यो न गयो। तब क्रोधकरि बोल्यो तुम पथरखाउ इतनीकहत लकरीते छूटि तरेगिर्यो। अहेरियन मारि भक्षण कियो ताते हौं कहतुहौं जो मन्त्री को कह्यो न मानै सो दुःखपावै। आगे एक बगुला आयो। तब चकवा बोल्यो। महाराज यह वही बगुला है जाहि पहिले पठायो हो। यह कहतु है गढ़में आग मेघवरण कागने लगाई अरु वह गीधको पठायो आयो हो। बहुरि राजा हंसकही शत्रुके उपकार औ प्रीति की प्रतीति कबहूं न करिये। जो करिये तो जैसे रूखको सोवनहारो गिरिकै पछिताय तैसे पछिताइये। बहुरिबगुला बोल्यो महाराजह्यांते जब मेघवरणगयो तब चित्र-

बरणने कह्यो अब मेघबरणको कर्पूरद्वीपको राजदीजै अरु याको दुःखदूर कीजै। कह्यो है जो सेवक कष्टपाय स्वामीको कार्यकरि आवै ताको तबहीं भलोकीजै। मंत्रीकही महाराज यह उचित नाहिं। याहि और कछुदेउ अरु मेरी बात सुनिलेउ। कह्यो है जाको जितनोमानताको तितनोदान। नीचको उपकारकरनो औ बारूमाहिं घीढारनो समानहै। पुनि जोनीचको बढ़ाइयेतो मुनेश्वरकी भांतिहोय। राजाकहीयहकैसी कथा है। तब गीध कहनि लाग्यो गौतमऋषिके तपोबनमाहिं महातपी नामएक मुनिरहै। ताके आश्रम में कागके मुखते छूटि मूसाको शिशु गिस्यो। वाहि देखि दयाकरि मुनिने आपने निकटराखि कन खवाय बड़ोकियो तब एक बिलाववाके खैबेकीघात में आयो करै। यह देखि मुनिने मंत्रकरि वाको बिलावकियो। फेरि एक श्वान आवनलाग्यो। बहुरि वाने वाहि श्वानकियो। पुनिएक सिंहआयोकरै। तबतिन ताहिसिंह बनायो। पर निजमनमाहिं मूसाही करिजानै। यहचरित्र देखिगावँके लोगकहनिलागेदे खौरे यह मूसाते सिंहभयो। सो या मुनिको प्रसादहै। याबात को सुनि वा सिंहने निज मन में बिचास्यो कि जौलौंयहमुनि रहैगो तौलौं सब लोग मोंहि ऐसेही कहतरहैंगे। ताते यामुनि मारखाऊं तो यहकलंकछूटै। ऐसे वह जीमें ठानिमुनिकेखानको चल्यो तद मुनिनेवाकी अन्तरगतिजानिपुनिवाहिमूसाकोमूसा बनायो ताते हौंकहतहौं कि महाराज नीचको ऊंचपद कबहूं न दीजै। यह बात सहज नाहिं सुनो। जैसे एक बगुला ने मछली खातखात नये मांस खानकी इच्छाकरि आपनो गरोकटायो कहूं तैसे न होय राजाकही यह कैसी कथाहै। पुनिगीधकहतहै॥

मालवदेशमें पद्मगर्भ नाम सरोवर। तहां एक बूढ़ो बगुला असमर्थ आपको उद्वेगी सो जनाय कह्यो करै। वाहिदूरतेदेखि एक कैकड़ाने पूंछ्यो कि भाई तू दुःखी क्योंहै अरु अहार छोंड़ा उदास ह्वै काहे बैठिरह्यो है। उनकही बन्धुमेरो जीवन तो

माछरीते। सो धीवर कहतुहै कि कालिह सकारे आय या सरोवर की सब माछरी मारिहौं। या दुःखतेमैं आजहीते आहारतज्यो। यह सुनि वा तड़ागकी माछरियन आपसमें कह्यो कि या समय बगुला हमारोहितू सो जानतुहै अरुअब याहीसों आपनो बचावहू दीखतुहै। कह्योहै जो उपकारकरै तो शत्रुहूते संधि करिये क्योंकि उपकार कैसो मित्राई को कारणहै। आगे माछरियन बगुलासों कह्यो कि तुम काहू भांति हमैं राखिलेउ। उन कहा तिहारे राखिबेको एक उपाय है कि जो मैं तुम्हैं और सरोवरमें लैजाऊं तो बचो। उनिनि कही सोई करो। पुनि वह बगुला एक माछरी मुखमें लैजाय और वाहि खाय आवै बहुरि लैजाय। ऐसेही सब माछरी खाई। तब एक कैंकड़ानेहू बगुलासों कह्यो मोहूंको लै चल। यह नयोमांस खानको मनोरथकरि वाहूको लैचल्यो अरु जहां बैठि माछरी खायही तहां लैजाय धरयो। माछरीनके कांटे हां परे देख कैंकड़ाने बिचारयो कि मृत्युतो दीखतुहै। पर ऐसो कह्यो है जोलौं डरिये तोलौं भय अरु जब भयआयो तब मरियै कैमारिये। क्योंकि जूझमरियेतो मनमें पछितावो न रहै। ऐसेबिचारि उन बलकरि बगुलाको गरो काटिडारयो। बकमरयो। तातें हौं कहतुहौं कि अपूर्व बात करनो कबहूं न बिचारिये। खोटो खुटाई नाहिंतजत। पुनि चित्रवर्ण कही अहो मेरे मनमें ऐसो आयो है कि मेघवर्णको ह्यांको राजदीजै। तो घर बैठे आछे पदार्थलीजै गीधकही महाराज अनभई बातको बिचारि जो सुख माने सो दुःखपावै जैसे कुम्हारके भांड़ेफोरि ब्राह्मणने दुःखपायो। राजाकही यह कैसी कथाहै। तहां गीध कहतुहै॥

कोटर नगरमें एक देवशर्मा नाम ब्राह्मण रहै। तिन मेषकी संक्रांतिमें काहूयजमानते एक करवा सातूको भरयो पायो। सो लैकरि रात्रिको काहू कुम्हारके घररह्यो अरु करवा वाके बासननिपर धरयो। तब निज मनमाहिं बिचारनंलाग्यो कि या सातूको बेंचि सातदमड़ी पाऊंगो ताको कछु और ल्याऊंगो। वाहि बेंचि

और और बेंचि और। या भांति जब धन बढ़ैगो तब नारियर सुपारी लै बड़ो ब्योपार करि धनबढ़ाय चारि बिवाहकरिहौं कह्यो है ब्राह्मण चारि बिवाहकरै औ चारोंवर्ण ब्याहैं क्षत्री तीन वैश्य द्वै शूद्र एकब्याहै। पुनि जब वे स्त्री आपसमें लरिहैं तब हौं जाको अवगुण देखिहौं ताके मारबेको ऐसे लौठिया घालूंगो यह कहि जो लौठिया घाली त्यों सतुआके करवासमेत उन कुम्हारकेभांड़े फोरे। बहुरि कहनिलाग्यो कि हाय मेरोकियोकरायो धरगयो। आगे भांड़े फूटे देखि कुम्हारने वाके सबकपरा खोंस वाहि तिरस्कार करि घरते निकारि दियो। ताते हौं कहतुहौं कि आगे को मनोरथ करै सो दुःख पावै। पुनि हँसकरि राजाने गीधसों पूंछी कि अब कहा करनो उचितहै सो कहो। गीधबोल्यो महाराज जो मंत्र राजाचूकै तो मंत्री मूर्खकहावै जैसे सांकरी गलीमें हाथी न चलै तब महावत मूढ़कहावै। तातेहौं कहतुहौं कि गढ़तो तिहारे पुण्य. प्रताप ते औ हमारे उपाय सों हाथ आयो अरु तिहारी जीतहू जगत्नेजानी। पर अब आपने देशको चलौ तौ भलो। ना तौ बर्षाकाल मूड़परआयो औ बैरी बराबरकोहै। यातेजो अब अटकिहौ तौ पराई भूमिमेंते निकसनो कठिनह्वैहै। ताते मेरे जान राजा हिरण्यगर्भते सुखसों मिलि हलभल करि निजदेश को पधारिये। कह्योहै जो मंत्री धर्मराखै सो राजाको सुहाती अनसुहाती कहै औ राजाहू बिचारै अनबिचारै प्रमाणकरै। ऐसो मंत्री राजाको हितकारी जानिये। पुनि कह्योहै जो आपने समानहोय तासों प्रीतिकरिये क्योंकि लरनो खांड़ेकी धारहै। यह दोउओर तकतुहै। पुनि युद्धमें जूझिबेके समय मित्र धन जन कीर्तिऔ अपनपौ शत्रुके सन्मुख मृत्युके हाथ दोनोंहोतुहै। पुनि राजाकही जो यहबात ऐसेहीहो तौ तुम प्रथमही क्यों न कही जो घरही बैठेरहते। मंत्रीबोल्यो महाराज हमारो बचन तुम आदिअन्तलों न मान्यो। मेरोबिचार विग्रहकरनि कौनहो क्योंकि राजाहिरण्यगर्भके गुण प्रीति करिबेयोग्यहैं वासों बैर न बूझिये।

कह्योहै जो सत्यवन्त, बलवन्त, धर्मातमा, प्रतिष्ठित औ अनेक संग्राम जीत्योहोयके जाके भाई बन्धु अधिक होयँ ताते युद्ध न करिये क्योंकि सत्यवन्त आपनो बोल निबाहै। बलवन्तपै कछु बल न चलै। धर्मातमा जीत्यो न जाय आपत्ति में वाको धर्म सहाय होय प्रतिष्ठित के नामहीते लोग परायँ। जिन अनेक युद्ध जीतेहोयँ ताकी धाकही सों सबडरंजायँ औजाके भाईबन्धु अधिकहोयँ वहकबहूं न हारै। याते हौंकहतुहौंकि महाराजअब संधिकरिये क्योंकि ये सबगुण राजा हिरण्यगर्भ में हैं। इतनी बात सुनि राजा हंसके दूतने आपने रजाते ज्योंकी त्यों जाय कही। तब चकवाने दूतसों कह्यो कि भाई यह तौ तुम अति मंगलकी बात सुनाई। पुनि जाय समाचार ल्यावो दूतगयो। तब राजा हंसने चकवासों पूंछी कि तुम काहेको मंगलमान्यो सो कहो। मंत्रीकही कि महाराज कह्यो है इतनेनते सन्धि न करिये बालक, वृद्ध, रोगी, लोभी, कायर, बैरागी, देव गुरु निन्दक। क्योंकि बालककोतेजअतिअल्प। तातेदण्डऔप्रमाद नकरिसकै याते वाको साथ कोऊ न देइ। बूढ़ो औ रोगी उछाह करिहीनरहै ताहिसहजही मारिये। लोभी अन्तसंधिकरै यहजानि वाके संग कोऊ न लरै। कायरआपही रणतेभाजै। बैरागी सबते उदासरहै। काहूबातमें मत न देइ। सो आपहीहारै। देव गुरुनिन्दकअधर्मते आपहीआप नष्ट होय। ताते ऐसेरिपुको युद्धकरि मारिये। पुनि कह्योहैजोराजा विद्यावान्होयशस्त्रविद्याजानैदेशकालपहिचानै आपनो परायो मानै गुण अवगुण मनआनै प्रभुतासहितरहैजहां जैसो उचित तहां तैसोकहै नीति करि सांचभाषै न्यावमें काहूकी कान न करै मंत्र सदागुप्तराखैसो राजा समुद्रान्त पृथ्वी को राज्य भोगै। इतनो कहि बहुरि चकवा बोल्यो महाराज जोहू गीध मंत्री ने संधि करिबे को कही पर राजा चित्रवर्ण अति अभिमानी है। वह वाकी कह्यो न मानिहै। कह्यो है कि भय बिन प्रीति न होय अरु संधिकिये दोऊओर कुशलहै। यासों मेरे मनमें

एकबातआईहै सोहोयतौभलो कि सिंहलद्वीपकोराजासारसमेरो परममित्रहैं। महाबल वाकोनामहै। ताकोहौंलिखौं कि वह चित्रवर्णके जम्बूद्वीपपै जाय मड़राय अरु ह्यां तुम आपनीसेनाको जोरि वाकी सेनाको पीर उपजावो। दिन रात उठत बैठत निकरत पैठत दबाओ तौ जयपावो। कह्यो है दोऊ तातेहोयँमिलैं लोहकी भांति राजाकहीमीकोजानो सो करो। तब चकवानेविचित्रनाम बगुलाको पत्रदै सिंहलद्वीप पठायो अरु वहां पाती पावत प्रमाणसारस चढ़िधायौ। आगे गीधमंत्री ने राजाचित्रवर्ण सों कह्यो कि महाराज यह मेघबर्ण काग गढ़में अनेकदिन रह्यो। याहिपूंछौ जुराजा हंस प्रीतिकरबेयोग्यहै कैनाहिं। तब राजाने कागसोंकह्यो कि अहोराजाहंस औ वाको मंत्रीकैसोहै। कागबोल्यो महाराज राजाहंस साक्षात् युधिष्ठिर है अरु मंत्री चक्रवाक की समान चतुर दूजो पृथ्वी में नाहिं राजा कही तैं वाहि कैसे डहंकायो अरुह्यां कौनप्रकार रहनपायो कागबोल्योकि महाराज राजा जाकी प्रतीतकरै ताहि डहकावनो कितेकबातहै जैसे जाकी गोदमें सोवै औ सोईमारै तो सोवनवारेको कहाबसाय। चकवाने मोहिं देखतही पहिचान्योहो। पर राजा हंसने मंत्रीको कह्यो न मान्यो। ताहीतेमें वाहिठग्यो अरु ह्यां रहनि पायो महाराज राजाहंस बड़ोसाहसी औसत्यवादी है कह्यो है जो आपसत्यबक्ताहोय सो और कोहू आपसों जानै जैसे एक सत्यवक्ता ब्राह्मणने औरकीबात सत्यमानि बोकराखोये राजाकही यह कैसी कथाहै तब काग कहनिलाग्यो॥

गौतमारण्य में एक ब्राह्मण यज्ञके निमित्त बोकरा माथेलिये आवतुहो। वाहि तीनि ठगनिदेखि बोकरालैनकोआपसमेंमतो कियो अरु वे तीनों साधुको वेषबनाय तीनठौर जायबैठे। जब वह ब्राह्मण पहिलें साधुके निकटगयो तब उनकह्यो अरेब्राह्मण यह कूकर माथेधरि काहे लियेजातुहै। इनकही कूकर नाहिं। यज्ञको बोकराहै। यह सुनि वह साधु चुपरह्यो। आगे दूसरेके

पासगयो। पुनि उनहूं कह्यो रेदेवता मूड़पैश्वान क्यौंचढ़ायो। इतनो सुनि इन बुरौमानि नाहिं शीशते उतारि देख्यौ अरुसंदेहकरतु चल्यो कि जो देखतु है सो याहि कूकरकहतुहै पर मेरी दृष्टिमें तौ बोकरा जनातुहै। ऐसे शोचत शोचतवह तीजके निकटजाय पहुंच्यो। तद उनहूं कह्यो अहोबिप्र कूकरा शिरतेडारिदे। तैं यह कहा अनर्थ किया जो श्वान मूड़पै धरिलियो। यह बात वाके मुखते सुनत प्रमाण वाहि कूकरजानि बिप्रने माथेते पटक आपनो पंथलियो अरुविननि बोकरालै आपनो मनोरथ पूरोकियो। ताते हौं कहतुहौं कि दुष्ट के बचनंते साधुहूकीबुद्धि चलै। बहुरि जैसे चित्रकरण ऊंटको सिंहने मारिखायो। राजा पूंछी यह कैसी कथाहै। पुनि बायस कहतुहै॥

एकबनमें मदोत्कटनामसिंह। ताके तीनसेवक। एक तेंदुआ दूजो काग तीसरोस्यार। विन तीननि एकदिन वाबनमें ऊंट देख्यो। तबउननि वाहि पूंछ्यो तू कहांतेआयो। उनकही में साथ भूलिआयो हौं। यहसुनि विनतीननि वाहिलैजायसिंहसों मिलायो। सिंहहूनेवाहिअभयदानदै राख्योअरु चित्रकरण नाम दियो। पुनि वह सबनके साथ हिलमिल रहनि लाग्यो। कितेकदिन पाछे बर्षाकालमें कईएकदिनकी झरीलागी औवा समय अहार न जुख्यो। तब विन तीननि आपस माहिंकह्योकि भाई अब कोऊ ऐसो उपाय करिये जु सिंह ऊंटहिमारै तौअहार खैबे को मिलै। तेंदुआबोल्यो मित्र याहितो सिंहने अभयदान दियो है। सो कैसे मारिहै। काक कही अहो समय पायराजाहू पापकरतु है जैसे भूखी नागिनि आपन अंडाखाय भूख्योकहा न करै कह्यो है मतवारो असावधान रोगी वृद्ध अधीर कामी क्रोधी लोभी भूख्यो डस्यो आदि ये सब अधर्म कोन जानैं न मानैं। ऐसे बतराय वें सिंहके निकटगये अरुहांथजोरि सन्मुख ठाढ़ेरहे। तब उनि पूंछी कछु खैबेको पांयो। इननि कही महाराज बहुत यत्न कियो पर कछु हाथ ना आयो। सिंह कहीअब

कैसे बचिहैं। बहुरि कागकही महाराज आप हाथ आयोअहार छोड़तुहौ। तातें औरहू ठौर नहींमिलत। सिंह बोल्यो सोकह। इनभुक कानमें कही या चित्रकरणको मारिखाओ। उनिकही याहिमें अभयदान दियोताहि कैसेमारों। कह्योहै भूमिसुवर्ण अन्न आदि दान बड़ेदानहैं। परशरणागत कोराखिबो इनतेअधिक फल देतुहै। बहुरि काग कही महाराज तुमजिनमारो। हम ऐसो उपायकरिहैं जु वह आपही जीवदान करि निज शिरतुम को देहै। यहसुनिसिंहचुपरह्यो। तबकागनेवाकोमनोरथजानि कपट करि। चित्रकरण सों कह्यो कि तोहिंतौ राजाने अभय दान दियो है परन्तु यासमय तुमविनते अहारकीमनुहारकरो। तो राजा तुमते अति प्रसन्न होयगो ऐसे वाहि फुसलाय सिंह पास लैजाय उनतीननि हाथजोरि कह्यो महाराज यह चित्रकरण कहतुहै कि अहार तो कहूं नाहिं मिलतु औ तुमअनेक दिनके भूखेहो। तिहारो दुखमोपै नाहिं देख्यो जातु। तातेतुम मोहिं मारखाओ हूं कह्यो है राजाते प्रजाकी रक्षाहै प्रजा को मूल प्रजापति है अरु मूलरहै तो डार पात फूल फलआपहीते होयँ पुनि सिंह कही अरे जल मरिये सो भलो पर ऐसो कर्म न करिये तबस्यार बोल्यो महाराज ऐसेही कह्यो है तबतौचित्रकरणहूने सिंहकी दृढ़ताजानि मनुहारकरिकह्यो महाराजआप मेरो शरीरखाओ। इतनीबात वाके मुखते सुनतहीसिंहनेवाहि दौरि मार्यो अरु सबनि मिल भक्षणकियो। महाराज तातेहौं कहतुहौं कि दुष्टकेउपाय औ उपदेशसों साधुहूकी मनसाडिगै। बहुरि राजा चित्रबरण बोल्यो अहोमेघबरण तुम इतेकदिनशत्रुनि माहिं कैसे रहे अरु कौनभांति उनते तुम तें प्रीतिनिभी बायसबोल्यो महाराज कह्यो है कि स्वामी के कार्य शत्रुहूकोमाथे चढ़ाइये औ गिराइये ऐसे जैसे नदीपाय धोय धोय रूखकोगिरावै। पुनि जो सुबुद्धी होय सोऊ आपने प्रयोजनके निमित्त बैरीहू को माथे चढ़ाय। निज कार्य साधै जैसे बूढ़े सर्पने शिर

चढ़ाय मेंडुक खाये। राजा कही यह कैसी कथाहै। तबकाकक-हतुहै काहूबनमें एक अतिबूढ़ो मन्द बिष नाम नाग रहै। सो आहार को फिर न सकै। ताते सरोवर के तीरपस्योरहै। काहू दिन एकदादुरने वाहिदेखि दूरतेकह्यो अहोतुम जो आहारनाहिं खोजतु परेई रहतुहौ सो कहाहै उनकही हौं कहांजाऊं औ मों अभागकोकोबूभतुहै। इतनीसुनि विन्माहि आचार्यजानिकह्यो कि तुम अपनी अवस्था कहो। तब सर्प कहनि लाग्यो॥

या ब्रह्मपुरी में कौडिन्यनाम ब्राह्मण। वाको बीसवर्ष को पुत्र पढ़यो गुन्यो। मैं अपने अभाग्य ते ताहि डस्यो तबकौडि-न्य सुशील नाम पुत्रको मस्यो देखि शोक सों घूमि भूमिपै गिस्यो। पुनि वाके भाई बंधु और गांवके लोग सब आयजुरे। कह्योहै सुख दुःख समयअसमय शुभ अशुभमें जे इष्ट मित्र बन्धु होयँ ते सुधिलेइँ। आगे एक कपिलदेवनाम ब्राह्मणने आययाहि समझाय बुझायकै कह्यो अरे कौडिन्य तू अति मूर्खहै जो अब खेद करतुहै। क्योंकि संसारकी तो यही रीतिहै इत उपज्यो उत मस्यो। ताते याको शोक कहा। देखो सेनासहित युधिष्ठिर से पुरुष न रहे। तो औरकी कहाचली बहुरि देहधारी को मृत्यु ऐसे लगी रहती है कि जैसे सम्पतिमें बिपत्ति प्राप्तिमें हानि संयोगमें बियोग ज्ञानमें ग्लानि पुनि यह देह छिन २ योंघटतिहै ज्योंजल में काचो घट घटै। कह्यो है शरीर यौवन रूप द्रव्य ठकुराई मि-त्राई और एकठौर को बास ये सब अनित्यहैं। याते जो ज्ञानी चतुर पण्डितहोय सो इनके गयेको शोच न करै अरु सुनोंजैसे नदीके प्रवाहमें जहां तहांके काठआय मिलतुहैं तैसे यासंसारके जीवहैं इनते जेतौ सनेहकीजै तेतौ दुःखहोय। क्योंकि जगमें सदाकाहूको साथ नाहीं निबहत। अरु जो आपनीही देहसाथ न देय तौ औरकी कहाचली कह्यो है माया किये यों दुःखबढ़ै ज्यों कुपथ्य किये रोग। पुनि काल ऐसें चल्योजातहै जैसे नदी को जल। यासों या संसारकी माया छांड़िदीजै अरु साधुकी

संगतिकीजे संगति साधुकी सब सुखसों अधिक सुखदेतु है ॥

दो० तीरथ व्रत जग देवता लाल मंत्र द्रुम खेत।
काल पाय फल देत हैं साधु सदा फल देत ॥

अरु मित्र सुनें।।जैसे बर्षाकालमें चामके बन्धन ढीले है जात हैं तैसे बृद्ध अवस्थामें या शरीरके। इतनीबात कहिपुनि कौडिन्य सों कपिलदेवने कह्यो भाई अब दुःख जिनकरो। आपने प्राण राखिबेको उपायकरो। यहसुनि कौडिन्य उठिबोल्यो बन्धु अब यह गृहरूपकूपमें न रहिहों बनमेंजैहों। पुनि कपिलदेवकही भाई अनुरागीको बनहूमें दोष औ उदासीको घरहीमें मोक्षकह्योहै। जो जन फलकी बासनाछांड़ि विष्णुभजनकरै ताहि बन औरघर समानहै। अरु कौनहू आश्रममें रहि दुःखसहि धर्म कर्म दान तप व्रत यज्ञकरै औ सब जीवपै दयाराखै ताहीको तपस्वी जानिये। पुनि जोप्राणराखिबेको आहारसंतानकोमैथुमकरै औरसत्यबचन भाषै सोदुःखरूपी समुद्रकोतरै। कह्योहै आत्मारूपीनदीके संगम है पुण्यतीर्थ सत्यजल शीलकरार दयातरंग तामें जोस्नानकरि अन्तःकरण शुद्धकरै सो जन्म मरण व्याधितेंछूटै।यहसंसार सार नाहीं। मनुष्यदुःखकोसुखकरिमानतहैं। जैसेबोझको बहनिहारो मोटपाय सुखमानै तैसे मनुष्यगति है। बहुरि कौडिन्य बोल्यो भाई तुमसांच कहतुहो। यह बात ऐसेहीहै। इतनो कहि विन लांबीसांसलै मोहितो यह शापदियो कि तूमेंडुकनको बाहनहो-उ। अरु वानेआप गृहस्थाश्रम छांड़िसंन्यासधर्म लियो। तातें अबमैं वाको दियोशाप भुगतबेको आयोहों। यहबातसुनिदादु-रने आपने राजासों जायकही। तब जलकुंदनाम मेंडुकन को राजा बाहर आयो। पुनि नागने वाहि प्रणामकरि मूड़पै चढ़ा-यो अरु तालके चहुंघा लै फिर्यो। दूसरे दिन जब वह आय चढ़्यो तब वह चल न सक्यो। पुनि दादुर बोल्यो उतावलो चल। सांपकही स्वामी मोपै मारेभूखके चल्योनाहींजात। उन कह्यो तू मेरी आज्ञाते सेनाके मेंडुक खायो कर। बहुरि सांपने

हाथजोरि कह्यो महाराज तुममेरी बड़ी सहायताकरी। योंकहि पुनि खानि लाग्यो कितेक दिन में सब मेंडुकनको खाय उनि जलकुन्दहूको खायो। ताते हौं कहतुहौं किजो चतुरहोय सो आपनो कार्य्य साधबेके लिये शत्रुहूको माथे चढ़ावतुहै। महाराज ऐसेही मैं हूं राजा हिरण्यगर्भसों प्रतीतबढ़ाय गढ़मेंरह्यो आगे राजा चित्रबरणने गीधसों कही किबाबाजू अब राजा हंस हमारो होयरहै तो वाको बसाइये। नातो आपने लोग। यहबात राजा चित्रबरण मंत्रीते कहनि न पायो हो कि एकदूतने आयकह्यो महाराज सिंहलद्वीप को राजासारस तिहारेदेशपै चढ़िआयोहै। जोनगर बचायो चाहौ तो बेग सुधि लेउ। नातो रहनों कठिन है। यह सुनि राजा मौनगहिरह्यो अरु गीधमंत्रीने मनमें कह्यो कि होय न होय यह चकवाको कामहै। पुनिराजा मयूर क्रोधकरि बोल्यो कि यह काबरहै। चलो। प्रथम वाही को खेदकाढ़ै। गीध कही महाराज शरत्कालके मेघकीभांति वृथानगाजिये बलकरि दिखलाइये। नीतितो योंहै कि एकही बेरि दिशि२के लोगनि सोंबैर न करिये। कह्यो है अनेक चैंटीहू मिलैं तो गजकोमारैं। ताते महाराज मेरेजान तो राजाहंसते बिन प्रीति किये इहांते निभनौंहू कठिन होयगो क्योंकि चलतही शत्रु पीछो करि है। याते बिचार करि कार्य करौ। बिन बिचार्‌यो कामकिये पाछे पछितावो होतुहै जैसे बिना बिचारे न्योर मारि ब्राह्मणी पछ-ताई। राजाकही यह कैसी कथाहै तब गीधकहतु है॥

उज्जैन नगरी में एक माधवनाम ब्राह्मण। ताकी स्त्री ने पुत्रजायो। सुएक दिन वह ब्राह्मणी पुत्रकी रखवारी ब्राह्मणको राखि आप नदी न्हैबेको गई। अरु ताही समय पण्डितको राजा को बुलावो आयो तब वाने विचार्‌यो कि जोहों न जाऊंगो तो राजा जोदान देइगो सो और कोऊ लैजायगो। कह्योहै लेनदेन के कार्य्यमें उतावल न करिये तोवह अवसर बीते हाथन आवैओ जोजाऊं तो बालक कौनको दैजाऊं यह बिचारि वहब्राह्मणजाके

नेरे एकबहुतदिनकोपोष्यो न्योरहो ताहिवाछोहराके निकटरख-
वारी राखि आप राजाकेह्यांगयो। आगे न्योराकेनिकट एकसर्प
आयो।ताहिन्योरानेमारिखायो। जबब्राह्मणीआई तबन्योर दौरि
वाकेपायँनपै गिरयो। उनयाको मुंहलोहू भरयो देखि निजमन
मेंजान्यो किइनचांडालने मेरोपूतमारिखायो यहसमझब्राह्मणी
ने न्योरेको मारिडारयो ।.पुनिआगूजाय देखे तो छोहराखेलतु-
है अरुवाके निकट सांप मरयोपरयोहै। तबवह पछतायकै बोली
कि हाय मैं पापिन यह कहा कर्म कियो जो बिनदेखे भाले बा-
पुरेन्योरको जीव लियो तातेहों कहतुहौं किमहाराज बिन बि-
चारे कबहूं कछु कार्य न कीजे। अरु कामक्रोध लोभ मोहतजि
दीजे। क्योंकि इन्ही दोषन ते राजापृथु जनमेजय रावण औकु-
म्भकर्ण मारेगये अरुदेखो शत्रु भाव छांड़ि परशुरामऔ अंबरीष
ने जितेन्द्रियहोय अनेक दिन राज्य कियो तातै हों कहतु हौं
कि महाराज जो मेरो कह्यौ मानो तो वा राजा ते प्रीति करि
चलौ। कह्यो है प्रथम तो पराई भूमि माहिंजाय डेरा करनों
कठिनअरु किये पाछेउठावनो अतिकठिनहै। यासों कार्यसाधि-
बेको चार उपाय कहेहैं सामदाम दंड भेद। परइनमेंसाम उपाय
सों वेगकाम सिद्ध होतु है। राजाकही प्रीति उतावली कैसेहोय।
गीधबोल्यो बेगही होय। कह्योहै साध देखतही मिलै औमूर्ख
कछु न समुझै। जोब्रह्माहू वाहिचितावे तौहू नजानै न मानै।
अरु महाराज राजाहंस तो बड़ो साधुहै औ वाकोमंत्री सर्वज्ञ
नाम चकवा अतिचतुरहै मैं काकके कहेते उनकी करणी औ
करतूत जानी। कह्यो है जाहि न देख्यो होय ताकेगुण औकर्म
सुनि २ के वाहि पिछानिये राजाकही अनेकबात करिबे ते कहा
प्रयोजन। अब जो उचितहोय सो करो। या बातके कहतही
गीधराजाते आज्ञाले गढ़मेंगयो अरु आपने आवनको समाचार
चकवासों कहिपठायो। वाने सुनतही आपन्दे राजाको जायसु-
नायो। तब राजा हंसने चकवासों कह्यो कि अबजो गीध के

पाछे और कटकआवै तो कहाकरिये ॥ चकवा बोल्योमहाराज यह शंकाकरिबेकी ठामनाहिं क्योंकि यह गीध बड़ो पुण्यात्माहै। याते कछु चिन्तानाहिं। कह्यो है बिन भयकीठौर सन्देहकरनो कुबुद्धि को कामहै। इतनी कहि चकवाने जाय गीधको ल्याय राजाहंस सों गढ़केद्वार आगे लिवायो। तद राजाहंसने गीध को आदरदै बैठायो पुनि गीध बोल्यो महाराज यह गढ़ आप को है। जाहि दियो चाहो ताहि देउ। हंसकही यहबात ऐसीहीहै। बहुरि चकवाबोल्यो सुनो। हमारो तुम्हारो एकही है। पर अबकछु अधिक कहिबेको प्रयोजननाहिं। गीध बोल्यो महाराज नीति शास्त्र में कह्यो है कि लोभी को धन दै भलो मनाइये उग्र होय ताकी कर जोरि स्तुति गाइये। मूर्ख को कह्यो राखिये पण्डित ते सत्य भाषिये। देवताकी निष्कपट पूजा कीजै। मित्रबंधुको अति आदरदीजै। सेवक औ स्त्रीकोदानमानते वशकरिये। तो याकठिनसंसारमें सुखसों दिनभरिये। ताते हौं कहतुहौं कि जो उचित होयसो अबकरिये। चकवा बोल्यो जोसंधि कीरीतिहै सोकहो। अधिकबात कहिबे ते कहा काम। पुनि राजाहंसने कह्यो किसन्धिके कितेक प्रकारहैंसोकहो गीध बोल्यो धर्मावतार हौं कहतुहौं। आपचित्तदै सुनिये। कह्यो कि जब बलवान् पै अतिबलवंत चढ़िआवै अरु वांपर याकोकछुबल नचलै तबसंधि उपाय करै। संधिकेनाम भूपाल, उपहार, संतान, संगति, उपन्यास, प्रतिकार, संयोग, पुरुषांतर, अदृष्ट,जीवन, आत्मा, उपग्रह, परक्रिया, उच्छिन्न, परभूषण। अरु ये संधि गतिहैं। समान ताते द्वैराजा मिलैं सो भूपाल संधिकहावै। दान दै प्रीतिकरै ताहि उपहारसंधि कहतु हैं। दासीदैमिलै वाहिसंतानसंधि कहतुहैं पांचसात मिल बीचमेंपरि प्रीतिकरावैं ताहि संगति संधिकहि गावैं। द्वैराजा एकही कार्य्य करि आपसमाहिं हित राखैं सो उपन्यास संधि। अब हम इनको कार्य सारैं पाछै ये हमारे कार्य आय हैं। ऐसे बिचारि जो मिलै सो प्रति

कारसंधि। एकही शत्रुपर द्वै नरपति चढ़ैं अरु पैंड़ेमें मिलैं वह संयोगसंधि। आपने योधानको साथलै मिलै वाहि पुरुषांतरसंधि कहैं। तुम कहि मारो हम तिहारे ह्वैरहैं यों कहिमिलै सो अदृष्ट संधि। भूमिदै प्रीतिकरै वहजीवनसंधि। प्राण राखिबेकोसर्वस्व देय ताहि आत्मसंधि कहैं। आपनोकटक सेवाको पठावै सो उपग्रह संधि। द्वैराजा आपसमें बैरभाव राखैं पुनि काहूशत्रुके घेरेमें आय दोऊ मिलजायँ सो परक्रिया सन्धि। सारभूमिदै मिलै वह उच्छिन्नसंधि। जो द्रव्य उपजैगो सो तुमको दैहैं पर निंकट जिन आवो ऐसेकहिमिलै वाहि परभूषणसंधि कहियें। इतेक बातेंकहि गीधबोल्यो महाराज येसब संधि कहीं। पर यासमय उपहारसंधिही भलीहै क्योंकिजोबलवंतआपनोदेशछाँड़िगांठिकोधनखाय आवे सो बिनभेंटलिये न जाय। तातेबिनदिये संधिनहोय। अब धनदीजै और उपहार संधि कीजै। चकवा बोल्यो सुनौयहआप नो वह परायो ऐसो जे बिचारतु हैं ते अधम जन हैं। अरु उत्तम जननिको तो ऐसो विचार नाहिं। वे तो सब सृष्टिहीकोकुटुम्ब जानतुहैं। कह्योहै जे पुरुष परस्त्रीको माता करिमानैंऔदूजेके धनको माटी समान जान पुनि सब जीवन को जीव आपनो सो गने तेई या जगत् में पण्डित औ धर्मात्मा हैं। बहुरि गीध कही तुम यह कहा कहतुहो। सुनों मेरेजान जिन संसार में आय या छिनभंग देहको धर्म छांड्यो तिन सर्वस्व गँवायो। कहतुहैं कि जैसे जलमाहिं पवनचलै चंद्रको प्रतिबिम्ब चंचल रहतु है तैसेही प्राणीको मन सदा स्थिर रहतु है। ताते या मनुष्यको उचितहै कि देहकी मायाछांड़ि अपने कल्याणको कार्य बिचारै अरु सदा सर्बदा सज्जननिकी संगतिकरै क्योंकि वासोंधर्मऔ सुख दोऊमिलैं। यासोंहौं कहतुहौं जो मेरो कह्योमाने तो ऐसेहीकरो। कह्योहै सहस्र अश्वमेधकी समान सत्यहै पर जोखिये तो सत्यही अधिकहोय। याते हौं कहतुहौं कि अब दोऊ नरपति सत्यबीचदै मिलो अरु उपहार संधिकरो तो अतिउत्तमहै क्योंकि

यामें सांपमरै न लाठीटूटै। चकवाबोल्यो तुम नीकी बात कही। यह सुनतही राजा हंसने रत्न वस्त्र अलंकार द्रव्य दूरदर्शी गीध को दियो। अरु बिनहूंलै प्रसन्न ह्वै सर्वज्ञ चकवा को साथकरि राजाहंससों बिदाहोय आपने कटकको प्रस्थानकियो। ह्वांजाय ह्यांको सब वृतान्त सुनायो औ चकवाको राजा चित्रवरण ते अतिआदर मानसों मिलायो। तबराजाहूने बड़ेमानसों पान औ प्रसाददै चकवाको बिदाकियो। इत चकवा राजा हंसके निकट आयो अरु उत गीधने चित्रवरणकोटेरसुनायो कि महाराजतिहारी सब मनकी बांछापूजी। अब कुशलक्षेमैं आपनेदेश चलो। यह सुनि राजामयूर वहांते चल्यो अरु आनन्दते आपनी राजधानीमें पहुँच्यो। दोऊराजाआय आपनेदेशमें सुखसों राज्यकरनिलागे। इतनीकथा कथविष्णुशर्मा बोल्यो महाराजकुमार अब जोकछु तुम्हैं सुनिबेकी इच्छाहोय सोकहो। राजपुत्रनिकही अहो गुरुदेव हमने तिहारे प्रसादते राजनीति के सब अंगजाने सुख पायो अज्ञान नशायो मनको खेद गवाँयो मानो नयोजन्मभयो॥

अथपंचमकथा प्रारम्भ ॥

विष्णुशर्मा बोल्यो सुनिये महाराजकुमार। याकथाके पढ़ेसुने ते मनुष्य कठिनताके समुद्रको ऐसेतरैं जैसे बानर आपनी बुद्धि सों तस्यो। अरु जो कपट सों कार्य लियो चाहै औ अधूरेकाम माहिं मनोरथ कहिदेय सो ऐसे ठगायो जाय जैसे मगरमच्छ ठगायोगयो। राजपुत्रनिकही यह कैसी कथाहै। तब विष्णुशर्मा कहनिलाग्यो॥

समुद्र केतीर काहूठौर एक जामुनकोपेंड़ सफल। तापै रक्तमुखनाम एकबानररहै काहूसमय सागरकी लहरको मास्यो एक बिकरालनाम मगरमच्छ वहांआयो अरु वृक्षतरे कोमल बालू में जाय बैठ्यो। तब मर्कटने वासे कही अहो तू आज मेरो पाहुनोहै याते मैं जम्बुफल देतुहौं। तू मनभरि भोजनकर। कह्यो

है हितूहोय कै अनहितू पंडित होयकै मूर्ख भोजन समय आवै तासों अतिथि धर्म कीजै ॥

दो० आवै भोजन केसमय शत्रु चोर चण्डाल।
अतिथिजानि पूजाकरै जगमें परम उदार ॥

आगे वह मगर फलखाय संतुष्टभयो। पुनि नितआवै नित जाय भली २ बातैं कहै सुनै। फलखाय अरु पाके २ फल आपनी स्त्रीहूकेलिये लैजाय। एकदिन वाने पूंछो अहोकंतये अमृतफल तुम कहांते ल्यावतुहौ। इनकही मेरो एक परम मित्र रक्तमुखनाम बानर है। सो मोहिं प्रीति सहित ये फल देतुहै। पुनि वहबोली जो ये अमृतफल नितखातुहै ताकोकरेजाअमृत समहोयगो। ताते तू वाकोकरेजा मोहिंल्यायदै। मैं वाहिखाय तृप्तहोय तोसों क्रीड़ा करोंगी मगर कही एक तो वह मेरो परम मित्र दूजे फलको दाता ताहि मैं कैसे मारिहौं। कह्यो है संसार में द्वैप्रकारके भाई होतुहैं। एकतो मा जायो दूजो मुख गायो। पर आप ने सहोदर भाईते वाहि अधिक जानिये। बहुरि वह बोली सुन। अबलों तो मेरो कह्यो तैं कबहूं न उल्लंघ्योहो पर आज तैं न मान्यो ताते मैं जान्यों कि जाहि तू बानर कहतुहै सो नाहिं वह बानरी है ताते तू आसक्त भयोहै। वाहीके अनुराग ते दिनभर वहां रहतु है। सो मैं जान्यो। याही ते तू मेरे पास आय वाही की बातैं। नित हंसि २ कह्यो करतु है औ रात्रि को सोवत समय तेरो अंग शिथिल रहतु है। मैं अब बूझी तेरो मन और नारी सों लाग्यो है। अधिक कहा कहौं। जबलौं अपनी सौत को करेजा न खाऊंगी। तबलौं अन्न पानी न करोंगी अरु प्राण दै मरोंगी। यह सुनि डरि मगर दीन ह्वै बोल्यो प्यारी हौं तेरेपायँ परतुहौं। तू जिन रिसाय। यों सुनि वाहि आधीन भयो जानि आँखिन में आंसूभरि बोली अरेधूर्त कंत आजलौंतो तैं मेरे अनेक मनोरथ साधे पर अब तू औरसों स्नेहकरि मेरो निरादर करतुहै। याते तेरो पायँनको परिबोदूनों

उस्दाहतुहै । अरु जो तेरो प्रेमवासों नाहीं तो क्यों न मेरोनेम पूरो करे। पुनि वह निजमनमें कहनि लाग्यो कि साधुजनसांच कहतुहैं ॥

दो॰ पाहनरेखरु तरुणिहठ कुकुट क्रोध सुभाय।
नीलरंगसम ना मिटे कीनेहु कोटि उपाय ॥

तातेमोहिं याके मनोरथको यत्न करनो बन्यों। यहबिचारह्वांते उठि वानरके पासजाय मगर अनमनोहै बैठिरह्यो। पुनिमर्कटने वाहि उद्वेगी देखि कह्यो अहो आज कहाहै जो तुम कछु भाषत नाहिं अरु चिंतितहोय बैठिरहेहो मगर बोल्यो मित्र आजतेरी भाभीने मोसों निठुर बचन कहि कह्यो कि तू कृतघ्नीहै अरु काहूके उपकारको न मानतुहै न जानतुहै। क्योंकि ऐसे उपकारीको तू एकबेरहू आपने घर नाहिं ल्यांवतु। पुनि निर्लज्ज होय वाके घरकाहे खायखाय आवतु है। अब अधिक कहाकहों जो तू मेरे उपकारी देवरको न ल्यावेगो तो मोकोंहू जीवतु न पावेगो। मित्र यातेमैंतो ह्वांते उदासहोय इततेरे लेनको आयो औ उत उनतेरे कारण कंचनरत्नते घर सँवार पाटम्बरछाय बिछाय नानाभांतिके पकवान व्यंजन बनाय राखेहोयँगे अरुपौंरि पर बैठि बापरी उत्कंठितबाट जोवति होयगी। बानर कही अहो मित्रभाभीने यह बात तो तुमते सांचही कही क्योंकि ऐसे औरहू ठौर कह्योहै मित्रताके छः लक्षणहैं दैनों लेनों निजदुःख सुखकहिबोवाको सुनिबोवाकेघरजीमनों आपनेगेहजिमावनों। ये बातें प्रीतिमें आवश्यक चाहिये। पर हम बनबासी तुमजल निवासी। ताते मेरो जैवो तो ह्वां नाहींबनतु। पै तुम कृपाकरि भाभीको ह्यां लैआवो तो मैं वाके पायँपरि अशीशलेउँ। मगर कही बन्धु हमारो गेह जलमाहिं नाहिं। जैसे समुद्रके कांठे इत तुम रहतुहो तैसे उतहम अरु जो तुम न जावोगे तो हमारोगृह कैसे पवित्र होयगो। याते तुम मेरी पीठपर चढ़िलेउ। मैंतुम्हें सुखसोंलै चलौं बहुरिबानर कही भाई जो ऐसाहै तो अबबिलंब

जिनकरो बेगही चलो। यह कहिवाकी पीठपर चढ़ि बैठ्योअरुवह लेनीरमेंपैठ्यो। पुनि ओंड़ेमें जाय बेगचलनि लाग्यो तब वानर बोल्यो भाईधीरेचलो पानी की तरंग मोहि ठेलेदेति है यहसुनि मगरने निजमनमें बिचार्यो कि अब तो यह बंदरा मेरीपीठतेतिल भरहू नाहीं खिसकसकतु। ताते हौं आपनों मनोरथ क्यों न कहौं जो यह अंतसमय जान आपनो इष्टदेवभजै। ऐसे जीमें ठानि उनि बनचरसों कही मित्रहौं स्त्रीकेकहे बिश्वासघात करि तोहिं मारिबेको लिये जातुहौं। तुम आपनो इष्टदेव भजो अरु जगकी मायातजो बानरकही भाईमैं भाभीको ऐसो कहा अपराधकियो जो तुममोहिं मारनिको साथलियो मगरबोल्यो अहो तुम तिन अमृतफल खातुहो। याते तिहारो करेजा अमृत समान होयगो। यह जानि उनखैबेको मनोरथ कियो है अरु वाके मनोरथ पूजबे को मैं हूं शिरपाप लियोहै। कह्यो है अग्निसाखदै जाको करगहिये ताको मनभायो कार्य करिये। यह पुरुषको धर्म है या बात को सुनि रक्तमुख बानरने वाकी मूर्खता देखि उक्ति युक्ति सों वाके मनोरथपर मनोहर बचनसुनाय कि मित्र जो तेरो ऐसोही बिचारहो तो तैं मोंते ह्वांहीं क्यों न कह्यो। जोमैं आपनो करेजा जम्बुतरुमें न राखि आवतो। वह तो मोपै भाभीके पायँ लागिबे की बड़ीभेंटही कह्योहै। राजद्वार देवद्वार गुरुद्वार सूने हाथ जैबो उचितनाहीं। पर हौं तो हृदयशून्य होय या अगाध जल में तेरीगैल चल्यो आयो अरु सुनि सबप्राणीकोभयहोतु है क्योंकि भयकोनिवासदेहमें करेजाहै। याहीते जीव शोचकरि चलतुहैं। आगले पायँको ठौरकरि पाछिलो पगउठावतुहैं। औ हमवनचर धरतीपगहूनधरैं। ताहीते हमारोनामब्रह्माने शाखामृग धर्योहै। सो आपने कुल धर्ममों भयको निवास जो करेजा ताहि निकारि रूखके खोड़र में धरि निर्भयह्वै डार २ दौरि २ कूदि२ फिरतुहौं। अरु अबहींतेरेसंग आवत जामुनके खोड़रमें यत्नसोंधरिआयो। बिनहृदयतेरेसाथनिर्भय ह्वै उठिधायो। यद्यपि

हमारो हृदय बिधातानें संसार की रीतिते बनायो है पर वह हमारे काहूकामको नाहिं। अरु तुम सोई चाहतुहो याते उत्तम कहाजो तिहारे कार्य आवै। कह्यो है॥

दो॰ धनदैकै जिय राखिये जियदे रखिये लाज।
धन दै जी दै लाज दै एकप्रीति के काज॥

इतनी बातके सुनतेही मगर आनन्दसों बोल्यो अहो प्रीतम जो ऐसीबातहैतो आपनो करेजा मोहिंदै जु याद्दुष्टपत्नीको हठरहै अरुतेरो जीवबचै मोहिं मित्र द्रोहको पाप न लागै। इतनो कहिपाछेफिर्यो। पुनि वे दोऊ आप अपनो इष्टसुमिरणलागे। कह्योहै अधर्मीको मनोरथ इष्टदेव भजेहू निष्फलहोय। आगे बानर आपने पुण्यप्रताप सों तीरपै जाय मगर की पीठतेउतरि लांबी २ डगैं भरि जम्बूबृक्षपर जायबैठ्यो औमनमेंकहनिलाग्यो कि मैं आज नयो जन्मपायो जु यादुष्टके हाथतेबचिआयो कह्योहै कि जाको विश्वासजीमें न आवै ताको विश्वास कबहूं न कीजै। पात्रकुपात्र बिचारिये। जाको जैसो स्वभाव होयतासोंतैसेही निबाहिये अरुदुष्टके मीठेबचननि पर न जाइये क्योंकि वह अपनी घातहीसों कहै। यहतो ऐसे बिचार रह्योहै। तामेंमगरबोल्यो भाई बैठिकाहे रह्यो। वहकरेजा मोहिंदे। मैंतेरीभाभीकोजायदेउँ। बानर कहीमित्र अथाह जलमें गयेतेश्रमभयो है। तातेमोंपैबोल्योनाहीं जात। मगर कही बन्धु पुरुषको कह्योहै कि श्रमजीत परमार्थ पुरुषार्थ करै। यहसुनि बानररिसायकै बोल्यो अरे मूर्ख विश्वास घाती तोहिं अरुतेरी मतिको धिक्कारहै क्योंकि काहूके द्वैकरेजाहू होतुहैं अबतू यहां ते जा फेरजिन आवनो कह्योहैजासों एकबेर जीवबचाइय पुनियाहि कबहूं नपतियाइये अरु जो वाको बहुरि बिश्वास करै तौ निदान अनेक दुःख भरि निःसन्देह मरै ये बातें बानरते सुनि मगर चिंताकरि कहनिलाग्यो कि मैं अभागे यहकहा कियो जुकामबिनभवेअपनोकपटयाके आगेकहिदियो। अब काहूभांति यातेबिश्वास उपजाय पुनि याहिदांवमेंल्याऊंतो

भलो। ऐसे मन में ठानि हँसकै बोल्यो कि हे मित्र तेरीभाभीको तो या बातसे कुछ प्रयोजन नहो। पर हौंहँसी कीरीति तेरीप्रीति कीपरीक्षालेतुहों। तुममनमें कछु जिनल्याओ औ मेरी गैलआओ। कपिकही अरे दुष्टजलचर तू ह्यांतेजा। हौंआवनकोनाहिं ऐसे गंगदत्तहूने कह्योहोप्रिदर्शनतेकहोकिफेरगंगदत्तकुआंमें आवनकोनाहिं। मगर कही यह कैसी कथाहै। पुनिमर्कट कहनिलाग्यो काहूएककुआंमेंगंगदत्तनाममेंडुकमेंडुकनकोराजारहै वाकोकुटुम्बतेवैरभयो। तबवह अरहटकी मालपैबैठिकूपते बाहर आय बिचारनलाग्यो किअबकौनउपायतेबैरियनमारिनिष्कंटक राज्यकरों। यहबिचाकरतुहो किवाने एककारोनागबिलमेंपैठत देख्यो अरुयाहिवह प्यारोलाग्यो। तबबोल्यो कि यासोंप्रीतिकरि शत्रुनको नाशकरों। कह्योहै कि रिपु मारिबेको अतिबलवंतशत्रुसों स्नेहकरिये औ शशाके मारिबेको बाघको बलधरियेथोरो पराक्रम कबहूं न करिये। नातो अवश्य हारिये। ऐसे जीमेंठानि सर्पके बिलद्वारपै जाय पुकार्यो अहो प्रियदर्शन मेरो तुमकोप्रणामहै बाहरआओ। यह सुनि वा सांपने निज मनमें बिचार्यो कि जो मोहिं बुलावतुहै सोमेरो सजातीय तो नाहिं क्योंकिसर्पको शब्द नाहीं औ न काहूसों मित्राई। याते प्रथम याहि भीतर बैठेही जानिलीजै तब बाहरपांयदीजै। कह्यो है जाको शील स्वभाव न जानिये तासों वेगही न मिलबैठिये। यह बृहस्पति को बचनहै। अरु जो मैं तुरन्तही बिन समझे बिलते बाहर निकरौं तो न जानिये कि कोऊ बैरी मंत्र बादी पकरै। ताते याहि जान्यो चाहिये। यों बिचार ह्वांईते बोल्यो अरे तूकोहैजोमोहिं टेरतुहै। इन कही हों गंगदत्त नाम मेंडुक मेंडुकनको राजाहौं। तोसों मेरी सहायता होगी। याते मित्राई करन आयोहौं। सर्प कही अहो यह अनमिल संगहै। तृण अग्नि कैसीमित्राई। पर अब तू मेरेघर आयो याते मैं कहाकहौं। कह्यो है जासोंअपनी मृत्युजानिये ताके नेरे सपनेहू न जाइये। पैतैं ऐसी कहा बि-

चारी। गंगदत्तकही अहो यहतो सांचहै अरु हम तुम जन्महीके बैरीहैं परहौं शत्रुको दबायो निरादर है तुम पास आयो। कह्यो है पगमें कांटो चुभै तो सुआसों काढ़िये अरु शत्रुसोंजब अपनो विनाशजानिये तब सबलशत्रुको आसरोगहि प्राणधनराखिये। पुनि नागबोल्यो तोसों शत्रुताकौनसोंहै। इनकहीकुटुम्बसों। उन पूंछ्यो तेरो निवास कूप तड़ाग बापी कहांहै। इनकह्यो पाथरनते बंधे कुआंमें रहतुहौं। सांप बोल्यो तौतो न बनी क्योंकि तहां मोसों न गयो जायगो। कह्यो अतिमीठो भोजन होय तोहू पेटभरखाईये अधिक लोभ न करिये। लोभकरे बिगारहोय दुःखपावे। पुनि गंगदत्त कही अहो ऐसो कह्यो है कि भेदीमिले कठिन ठौरहू सुगमह्वैजातुहै जैसे घरको भेदी लंकाखोई अब मैं तुमते हौं को सारो भेद कहतुहौं। तुम चित्तदै सुनों। वा कुआं के ऊपर रहट चलतुहै ताकी माल ते लागि नीचे जाय एक खवाल में बैठि तुम हमारे शत्रुनि निरिंचताई सों खाओ अरु चैनसों बैठि मंगलगाओ। हौं तुमसे आचार्यको अपनी गाढ़ में कछु समझही लिये जातुहौं। तासों तुम काहू भांतिकी चिन्ता जिन करो बेगचलकै मेरीराजधानी की रक्षाकरो। इतनी सुनिसर्पने बिचार्यो कि यहकोऊ मेरेभागते मोहिं आपने कुलको अंगार आय मिल्यो है अरु मोहिं तो याठौर आहारहू नाहीं जुरतु। याते वा ठौर याके संग जाऊँ तो बिनश्रम बैठ्यो आहारपाऊँ। कह्यो है कि जब देहको बलघटे अरुकोऊ सहायकनहोय तब पण्डितलोग सो अपनीजीविका वृत्तिबिचारे। ऐसे सर्पने निजमनमें ठानि गंगदत्त सों कही आजते तू मेरो मित्र भयो। अबह्वां लैचल जाहि कहैगो ताहिखाऊंगो। या रीत सों बातें बचन कहि नाग बिलतेबाहर आयो। पुनिदोऊचलतरायकूप पै आयरहटकी मालमें लागि वा माहिंधँसे औ खवाल बीच बसे। आगे गंगदत्तने आपनेशत्रु चीन्ह २ बताये। उनबीन २ खाये। जब उनमें ते कोऊ न रह्यो तब सर्पने गंगदत्तसों कह्यो

कि मित्र मैंने तेरो कैसोकामकर दियो जुशत्रुनिमारि निष्कंटक राज्य कियो। गंगदत्त बोल्यो भाई जैसे भले मित्र कार्य करतुहैं तैसे तुम कीनों अरु मोहिं सुखदीनों। पर अब याही रहठकी माल लागि आपने धामपधारो। नागकही हितू यह कहाकहतु है। तैं मेरोघर छुड़ायो मोकोह्यांलै आयो ह्यां औरही मेरो सजाती आनि रह्यो होइगो। सो मोहिं बिलमें काहे बड़नदेयगो। ह्यांसों तैं मोहिं आन्यो आपनों करिठान्यो। अब मेरे आहारकी चिंताकरनातो हमसों तुमसों नबनिहै। कह्योहै आहारे व्यवहारे लज्जानकारे। यह बात सुनिगंगदत्तको उत्तरनआयो। तब निज मनमें पछतायो कि मैं मूर्ख यह कहाकियो। जु आपनोंघर दियालै दिखाय दियो। अब यह बिरोधके बचन कहतुहै। कह्योहै कि सर्वसजाता जानिये तो आधोदीजै बांट। ताते याके खैबेको आपनी बगरके मेंडुकते एकएक नितदीजै। ऐसे मनमें ठहराय बोल्यो भाई तुम आपने आहारको मेरी बाखलते एक दादुर नितलेहु अरु जैसे आपनेघर रहियतुहो तैसे रहौ वह वाही भांति रहनि लाग्यो। एकदिन गंगदत्त को पुत्र शुभदत्त नामवाकेआहारमेंआयो। तब गंगदत्त रोवत २ आपनी स्त्री के सम्मुख धायो। उन कह्यो रेकुटुम्ब के मारनहारे अब क्योंरोवतुहै। तोहिं तो कुटुम्बको पाप लाग्यो परअब निज प्राण राखिबेको यत्न कर। यहबात सुनि गंगदत्त ने आपने किये को बहुतपरेखोकियो। आगे जब केवल गंगदत्तही रह्यो तब प्रियदर्शनने बिचार्यो कियासों मोसों बोलबचनहै ताते याते भोजन मांगों। जबयह कहैगो अब तोहींही रह्यो तब याहि छलकरिखाऊंगो। सर्पने ऐसे मनमें ठानि गंगदत्त सों कही रेप्रीतम अबतो यहां मेंडुक नाहिंअरु मोहिं भूख लागीहै। गंगदत्तबोल्यो हे प्रीतम अबतो हमतुम द्वै भाईहीरहे पर आज्ञा करौ तो दूजो ब्याह करौं औ प्रजा बसाय कुटुम्बते घरभरों। तुम मेरी राजधानी की चिंता करो औ मैं तिहारे आहारकी कहोतो अबहीं जाय तालके

मेंडुकन बुलायल्याऊं अरुफेरिज्यों को त्योंनगर बसाऊं। सर्प कही बन्धुयहतो तुमनीकी बिचारी यातेतौ तिहारो राजधानी रहै अरु मेरी जीविकाहू चलै। सुन अबलौं तू मेरो भाई हो पर आजसों तूमेरे पिताकी समानहै। इतनों सुनि गंगदत्त रहटकी माललागि कुआंके बाहर आय निज मनमें कहनि लाग्यो कि मैं आजकालके गालतेनिकरिआयो सोमानोंनयो जन्मपायो। ऐसे कहि एकसरवरमें जायरह्यो अरुह्वांनागने कितेक बेरलों याकी बाटजोई। निदान घबरायकै बोल्यो कि मैं अभागे यहकहा कियो जुवाहि जीवतुजांन दियो। सब दादुरकुआंके खाये पर जबलग गंगदत्त मेरी डाढ़तरे न आयो तबलौं हौं नेकहू न अघायो। ऐसे कहि कूपमाहिं एकगोह रहतीही। इन तासों कह्यो हे प्यारी तू मेरी संतुष्टताको कार्यकरै तौहौं तोसों एकबात कहौं। वह बोली कह। याने कह्यो कि गंगदत्त तालमें मेंडुक लेनगयो है। ताहि जाय कह कि दादुरलै बेगचल अरु वे न चलैं तोतूहीचल। तेरे देखेही वाकीभूख जैहै। कह्योहै भूख प्याससही जाय पर मित्रको वियोग न सह्योजाय। पुनि कहियो कि उनमोसों कह्योहै जु मोहिं भूख्यो जान मनमें कछु भय न करै। जो मैं वासों द्रोह करौं तो मेरे सब कियेकर्म धोबीकी नांदमेंपरैं। इतनोंकहि सांपने गोहको विदाकियो। वह कूपते निकरि गंगदत्तके पासजाय नागको संदेशो सुनाय बोली कि उन कह्योहै। अबदोऊमित्र बैठि धर्मचर्चा करिहैं। खैबेको शोच जिनकरो पूरणवारो कन कीरी औ मनकुंजरको देतुहै। गोहते सब बात सुनि गंगदत्त बोल्यो हेप्रिये कह्यो है भूख्यो कौन पाप न करै। नीचजीव निर्दई होतुहैं। ताते तू प्रिय दर्शन ते जाय कह कि अब गंगदत्त कुआंमें आवनको नाहिं। ऐसेकहि उनगोहको बिदाकियो। इतनी कथाकहि बानरने मगरसों कह्यो अरे दुष्टजलचर तू यहांतेजा हौं गंगदत्तकी भांति फेरतेरे घर जानको नाहिं। पुनिमगरकही मित्र तुम्हैं ऐसोकरनो योग्य नाहिं। सुनों जो तुम मेरो कृतघ्न

दोष दूर न करिहौ तो मैं तिहारे बार उपवास करि मरिहौं। बानर बोल्यो रेमूढ़ तू केतऊ कर पर मैं लंबकरण गदहाकी भांति फेर न जाऊंगो। मगर कही यह कैसी कथाहै तहां बानर कहतुहै॥

काहू बनमें एककराल केशनाम सिंह। अरु ताको सेवकधूसरनाम स्यार रहै। सु काहूसमय वह सिंह गजसों लस्यो। वाके शरीरमें चोटलागी ऐसी कि वात एकडगहू न चल्योजाय। यासों वाहि आहार न जुरयो। तब जंबुकबोल्यो कि स्वामी मेरे तो मारे भूखके प्राणजातुहैं अरु तिहारी सों यहगतिहै जुडगभरहू नाहीं चल्योजात। मैं सेवा कैसेकरों। सिंहकही अरे तू कहूंकोऊ जीव जायदेख जो मेरी यहदशाहै तौहू ताहि मारिहौं। यहसुनि स्यार ह्वांते चलि गाँवके निकटआयदेखै तो एकतालके तीरलम्बकरणनाम गदहा चरतुहै। वाहिदेखियानें कह्यो मामातोहिं मेरों प्रणामहै। आज अनेक दिन पाछे मैं तिहारो दर्शन पायो अरु सबदुःख पापगवाँयो। यों कहि वह धूर्त्त पुनि बोल्यो मामा अबकै तोहिं अति दुर्बल देखतुहौं सुकहाहै। उन कही अहो भगिनीसुत कहाकरों। यहधोबिया बड़ो निर्दई है। मोपै बहुत भारलादतुहै अरु एकमूठी हू अनाजनाहीं देतु। हौंधूर मिश्रित रूखेसूखे तृणखाय रहतुहौं। तुमहीं बिचारो। ताते देह कैसे पुष्टहोय। स्यारकही मामा जोतू ऐसी बिपतिमें है तोमेरेसाथ चल। मैंतोहिं आछी ठौरलैजाऊं। तहांनदीके तीर मरकतमणिके वर्ण हरी हरी दूबचरो औआनन्दते बिचरो। अरुहमतुमतहां बैठि आछी आछी बातैंकरैं औ रहैं लम्बकरण बोल्यो अहो भगिनी सुतयहतो भली बातकही परतुम बनबासी हम नगर निवासी तिहारी जीविका मांसतेहमारी तृण नाजते। यातेहमारो तिहारो मेलकैसे बनै अरु वहभली ठामहमारे कौनकार्यकी। स्यार कही मामा ऐसे जिनकहौ। वा ठौर "तुम मेरी भुजान के बलते रहौ। ह्वांकाहूभांतिको दुःख भयनाहीं। औरहू गदही

अनेक आपनी जीविका के लये रहतिहैं मोपाहीं। औते आई हीं तब अतिदुर्बल ह्वैरहीहीं। ताते महा कुरूप दीसतिहीं। मेरे आश्रममें आय उननि सुखपायो आहार मुकतौ खायो। तासों वे पुष्टहोय चम्पावर्णी ह्वैरहीहैं अरु वे कामकी सताईमोसों निशंक आपनो मनोरथ आयआय कहतिहैं औतामें आज प्रात ही एक मामी ने मोते आयकही कितेरो मामा सपने में मेरोपति भयोहै। ताहिल्याय मोसों मिलायदै। याते तुमवेगचलो। नातो वाहि कोऊ और लैजायगो। यहबात सुनि कामातुरहोय लम्बकरण बोल्यो अहो भानजे जो ऐसी बातहै तो आगहोय तोहू मैं चलौंगो कह्योहै स्त्रीमें द्वैगुण एकअमृत औ दूजोविष। संयोग अमृत औ वियोग विष। पुनि जाको नाम लिये मनुष्य प्रसन्न होय ताको मिलन सुखतो अधिकही होयगो। आगे वहस्यार गदहाको फुसलाय लैगयो। औसिंह गदहाको देखतेहीधायो। तबयह भयमानह्वै परायो औ वाके हाथ तो न आयो परनाहरके हाथकी चोट वाके शरीरमें लागी। सिंह अछतायपछतायबैठरह्यो तब जम्बुक बोल्यो कि तुम यह कहा कियो जु गदहाछांड़िदियो बस देख्यो तेरो पराक्रम। जो याहीको न मारसक्यो तो हाथी कैसे मारैगो। नाहरकही अरे एकतो मेरी देह निर्बल दूजेवाको आवनो मैं नजान्यों। यातेवह निकरगयो। नातोहाथीखेदमारों पुनिस्यारबोल्यो भलो जोभयो सोभयो। वाहि जानि देउ। अब हौंवाहि फिर ल्यावतु हौं। तुम सावधानहोय बैठो। सिंह कही अरे जोमोहिं देखिगयो है सो फेर कैसे आवेगो स्यारबोल्यो तुम आपने पराक्रमकी बात कहो। वाहि ल्यावनको हौं जानों। यह बातसुनि सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैठ्यो। औस्यारतहांतेचलिनगर में पैठ्यो। गदहाके ढिग जाय हँसिकै बोल्यो अरेमामातूवहांते क्यों बगादि आयो। उनि कही अहो भगिनीसुत तूमोहिं भली ठौरलैगयो जुमैं नीठनीठ मीचके हाथ ते बचिआयो। वहकौन जंतुहो जाके हाथकी चोटमेरे शरीर में वज्रसमलागी। स्यारन

मुसकराय.कै कह्यो मामा वहतो मामीही। तो को आवत देखि अनुरागते आतुरहोय आलिंगन करिबेको उठीही। परतूनपुंसक जोभाज्यो सुवह सकुच करि वहांहीं बैठगई। कह्यो हैजब स्त्री क्रीड़ासमयढीठहोय ढिठाई करै अरुवाके भर्ता सोंकछुकार्य न सरै वह आपनी ढिठाईते आप लज्जित होय। अब वाने मोसोंकह्योहै कि जाके शरीरमें मेरो हाथ लायो में ताहीको बरिहौं ना तो लंघन करि करि मरिहों। तूही ताके मनमें बस्यो है। तेरेही बिरहसों वह बापुरी दुःख पावति है यातेहों कहतुहों। कि तू बेग चलि वाकोमनोरथ पूराकर। न जानिये जो बिरहब्यथातेवाको जीवनिकरिजाय तौ तोहिं स्त्रीहत्याको पापलागै कह्योहै बालक स्त्री, गो, ब्राह्मणकी हत्याते महानरक भोगनों होतुहै। औ भगवान् ने संसार में नारीबड़ीबस्तुबनाई है ताहीते सबको प्रियहै॥

दो०. नारी नारी सब कहैं नारी नर की खान।
अन्तकाल में देखिये नारीही में प्रान॥

अरु जे स्वर्ग की इच्छाकरि नारी को तजतुहैं तिनको कामदेवपीड़ा देतुहै। देखो कोऊ नग्नहोय छारमें लोटतुहै। कोऊ आपनेहाथ आपनो शिर खसोटतु है। कोऊजटाराखि पंचाग्नि माहिं बैठि जरतुहै। कोऊ कपाली आसन मारिऔऊर्ध्वबाहूहोय दुःखभरतु है। पुनि कह्यो है नारी सबसुखकी जरहै इतनोंकहि बहुरि स्यारबोल्यो कि मामाहौं तिहारोहितूहोयकहतुहौं क्योंकि तिहारे सुखते हमें सुखहै औ दुःखते दुःख। आगे गदहा स्यार को उपदेश सुनि कामांधहोय हर्षिपुनि वाकेसाथचल्यो। कह्यो है कि जब मनुष्य कर्मके बशहोय तब खोटी बातको जान केहू न मानै। बिनाकिये नरहै। पुनि ज्यों खरवहांगयो त्योंहींसिंहने मारलियो। आगे सिंह स्यारको गदहाके ढिगराखिआपनदीनहैबे गयो। जौलों वहस्नान, ध्यान, पूजा, तर्पणकरिआवतौलों स्यार चंडालने क्षुधाकेमारे गदहाकेकान नैनऔहियोलैभक्षण कियो। सिंहआनि देखै तौ वाको हृदय औनेत्रकर्णनाहिं। तब

उनिस्यारसों कह्यो अरेयहतैं कहा कियो जो आंख कान औहियो ताको काढ़ि खायलियो। तेरो जूंठो मैं कैसे खाऊं। स्यार कही स्वामी ऐसो जिनकहो या जीवके कान आंख हियो होतनाहीं। क्योंकि कानहोते तौ तिहारोनाम इन याबन मेंसुन्यों होतो। अरु नेत्रहोते तौ तुम्हैं देखिफेरि न आवतो। औ हियो होतो तौ तिहारे करकी चोटखाय फेर न भूलिजातो यहबात स्यारते सुनिसिंह ने गदहा बांटिखायो इतनी कहि बानर बोल्यो अरे जलचर हौं लम्बकरणनाहिं जु तेरेसाथ अबआऊं। क्योंकि तैं प्रथमही मोसों कपट कियो। बहुरि युधिष्ठिर कुम्हारकी भांति सबभेद कहिदियो मगर कही यह कैसी कथाहै। तहां बानरकहतुहै॥

एकसमय काहू देशमें अतिबर्षाभई। ताते कालपरुयो। तब वहां के कितेकरजपूत कहूं चाकरी को चले तिनकेसाथ युधिष्ठिर नाम एक कुम्हारहू होलियो। वाके माथेमें घावहो कितेक दिनमें काहू और देशमांहिंजाय एकराजा के यहां चाकरभये। कुम्हार के लिलार को घाव देखि राजा ने अपने जीमें बिचारुयो कि यह कोऊ बड़ो शूरहै जुयाने सन्मुख चोटखाई है। याते राजावाहिवाके सबसाथियनते अधिकमानै। एकदिन वहनरपति आपने सब सुभटन सहित सभामें बैठ्यो हो कि वानेयासों पूंछ्यो. अहोरावत यहघाव तुम मस्तकपर कौनसी लड़ाई में खायो। इनकही महाराज मेरोनाम युधिष्ठिरहै। यातेहौं झूंठनाहीं बोलत मैं रजपूत नाहीं। जातिको कुम्हारहौं। अरुयह घाव मैंने रणमें नाहींखायो। याकोभेद कहतहौं सुनो कि मेरे पिताके व्याहको उछाहहो। तहां मैंहूं आपनी मंडलीमें भाँगपी घरमें दौरुयो। सुउरवटपरुयो। एकठिकरा मूड़में पैठ्यो। ताको यह चिह्नहै। इतनीबात सुनतही राजा रिसकरि बोल्यो इनमोहिं धोखोदियो अरुयाके लिये मैंने इनराज पूतनको अपमानकियो अबयाहि धकाहि काढ़ो कुम्हार कही महाराज ऐसे जिनकीजै। बरनयुद्धमें मेरी परीक्षालीजै। राजा बोल्यो अरे सबगुण संयुक्त कुलमें तू जनम्यो नाहिं। ऐसे

स्यार शिशुको सिंहनीनेहूं कह्यो हो। कुम्हार कही यह कैसीकथा है। तब राजा कहनलाग्यो॥

काहू बनमें एक सिंह औ सिंहनी रहैं सु सिंहनीने द्वै शिशु जाये। तद वाकोपति वाकेलिये अनेक अनेक भाँतिके जीव औ जन्तुमारिल्यावै। एक दिन वह सारोदिवस फिस्यो। पै वाकेहाथ कोऊ जन्तुनआयो। जब सूर्य्य अस्तभयो तब निराशहो घरको आवनलाग्यौ। तहां गैलमें एक स्यारकोसुत तुरतको जायौ इन पायौ। ताहि यत्नसों मुखमें राखि सिंहनीकेढिग जीवतल्यायो। वाहिदेखि बाघिनी बोली हेनाथ कहा आज और जन्तु न पायौ। सिंह कही भद्रे सिगरौ दिनभटक्यौ परकछुहाथ न आयो। अबहीं डगरमें आवत यह हाथपस्यो। सुयाहि बालकजानि मैं नाहिंमास्यों। तेरे पथ्यके लिये ल्यायो हौं। सिंहनी बोली स्वामी यातें मेरो पेटहू न भरैगो। वृथा याहिंक्यों मारौं कह्यो है बाला वाल ब्राह्मण येतीनों अबध्य हैं। विशेष अपने घरआवै ताहि तौ कबहूं न मारिये। बाघ बोल्यौ जोतैं ऐसी बिचारीतौ यह कैसे जियैगो। उनकही याहिमैं आपनो दूधप्याय जिवाऊंगी। जैसे मेरे ये द्वै हैं तैसे तीसरो यहहूरहै। ऐसे कहि वह वाहि दूधपियावनलागी। आगेजद वे बड़ेभये तौ वे बिनजाने इकट्ठेरहैं। अरुस्यार शिशु तिनमें बड़ोभाई कहावै। एक दिन वा बनमें हाथीआयो तबसिंह शिशु बोल्यो अहो यह गज आपने कुलको बैरीहै। चलौ याहि खेदमारैं। यह सुनि स्यारशिशु इतनो कहिभज्यो। कि भाई याके सन्मुख कहाजात हौ। वाके साथ सिंह शिशुहूभजे अरु वे तीनों घरआये। कह्योहै कि युद्धसमय आगे शूरहोय तौ वाहि देखि औरन कोहू शूरताहोय। अरु एककायर संग्राम छोड़भजै तौ वाकेसंग सबभजैं। आगेसिंह शिशुनि आयमातासों कहीकिमा यह हाथी देखिपरायो अरु याकेपाछे हमहूं। अपनी निन्दासुनि स्यारको शिशु उनके मारिबे को उठ्यो। तब सिंहनी बोली ये तोते छोटे हैं। तू इनते बड़ो है। याते तोहिं इनपै क्रोध करनो

उचित नाहिं। उनकही ये मेरी निन्दा करतु हैं सो कहाहौं इनते कुल बरण पराक्रम में घाटहौं केहाथी नाहीं मार जानत। यह सुनि सिंहनी ने वापै दयाकरि वाहि एकान्तलैजाय कह्यो कि पूत तू सुंदर औ बलवान्है पर वा कुलमें जनम्यों नाहिं जुहाथी मारै अरे तू तौ स्यार है मैं तोहिं दयाकरि आपनो दूध प्याय जिवायो है सु ये तोहिं जानत नाहिं। अरु अब इन ते तोतें विरुद्ध भयो। ये तोहिं बिनमारे न रहेंगे। याते हौं कहति हौं कि तू अब आपने। सजातियनमें जायरह। नातौ जीवत नबचैगो। इतनो सुनि वह हवांते उठि पूंछदबाय आपने सजातीनमें जायमिल्यो। यह प्रसंगकहि राजाने कुम्हारसों कह्यो कि सुन। तू वा कुलमें उपज्योनाहिं कि लोहकी आंच झेलै। पुनि सभाते उठायदियौ। तातेहौं कहतुहौं रेमूखे जलचर तैंहू युधिष्ठिरकी भांति कपट कहिदियों सु यह कहाकियौ। नीतितौ योंहै कि जहां सांचबोलेते कार्यबिगरै औ झूठते सुधरै तहां सांचसों झूंठही भलौ। कह्योहै जु मिथ्याकहे काहूको जीवबचै औ आपनो माहात्म्यरहै तौराखियै। द्वैठौर झूठ बोलिबेको दोषनाहिं। अरु बिनबोले कार्यसरै तौ कबहूं न बोलिये। औहरकाममें चपलताकरि बिन स्वारथ न बोलि उठिये। देखो बगुला मुनि धर्मसाधे निजकार्यकरै औचपलहोय सुआबोलि बन्ध में परै। इतनोंकहि पुनि बानर बोल्यो अरे मूढ़ तैंस्त्री के संतोष के लिये ऐसो अधर्म बिचारयो कि मोहिं मारनकों उपस्थित भयो। कह्यो है नारीको मनभायौ सहज में होयतौकरिये अरु वाके कहे मूर्खहोय निजधर्म न बिसारिये। क्योंकि स्त्री जन अपस्वार्थी होति हैं। विनकी प्रतीत कबहूं न कीजै जैसे एकब्राह्मण प्रतीत करि पछतायौ तैसे पछतावनो होय मगर पूंछी यह कैसी कथा है। तहां बानर कहांनि लाग्यौ काहूगांवमें एक ब्राह्मणरहै ताकी नारी अतिसुन्दर चन्द्रमुखी चम्पकबरणी मृगनैनी पिकबैनी गजगौनी कटि केहरी अरु जाकेकरपद कोमल कमलसे नारंगी

समकुच बार श्यामघटा की समान दांत हीराकीसी पांति ओंठ बिम्बाफल जान भौंह धनुषमान। पुनि कीरकीसी नाक कपोत कैसो कंठ और कर्त्तारने वाहि ऐसी सँवारी कि मानों सांचेकीसी ढारी। वाके रूपकी ईर्षा सब कुटुम्बकी नारी खायोकरैं। जब यह चरित्र वाके पतिने देख्यो तब वह घरकी माया छोंड़ वाके आधीनहोय वाहि साथलै परदेशको चल्यौ। कितेक दूरजाय वाकी स्त्रीने कह्यो हे स्वामी मोहिं प्यासलगीहै। उन कही प्रिय तू ह्यां बैठ हों जल खोजिलाऊं यहकहि वह तो पानी शोधनगयो औ ह्यां प्यासकेमारे याको प्राण निकरिरह्यो। वह आय याहिमरी देखि अतिबिलाप करनलाग्यो तद आकाशबाणी भई कि अरे याकी तौ आयु पूरीभई। पर जो तेरो यासों अधिक स्नेहहै तौ तू आपनी आयुर्बल याहि दै। ऐसे सुनि विप्रनें हाथ पाँयधोय आचमनकरि पवित्रहोय आधी बैसवाहिदई। वह झट उठिबैठती भई। जलपीयं दोऊ आगें चले। औ काहूगाँवके निकट जाय एक मालीकी बारीमाहिं उतरे। जद ब्राह्मण गाँवमें सीधोलेन गयो तद ब्राह्मणी बारी में फिरनलागी। तहां देखै तौ एक पंगु कुआंपै बैठ्यो गायगाय रहटको बर्द्ध हांकि रह्योहै। वाको गान सुनि ब्राह्मणी रीझिताके निकट जाय कहनि लागी अरे मेरोमन तोसों अटक्यो। मेरो मनोरथ पूरोकर। उनकही अरीघरगई हौं पंगु। तू मोहिं कहा करैगी। इनकही दईमारे निगोड़े तोहिं या बात सों कहा काम। जो मैं कहौं सो तू कर। अरु जो तू मेरो कह्यो न करैगो तौ मैं तोहिं हत्यादूंगी यह सुनिवानि वाकोमनोरथ पूरोकियो तब ब्राह्मणी प्रसन्नहोय बोली आजते यह जीवतेरो दियोहै। आगे सीधोले बिप्रआयो। अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजनकों बैठे तब ब्राह्मणीने पंगुहूको जिमायो। पुनि जदह्वांते चलिबेकोभये तद ब्राह्मणीने अपनेपतिसों कह्यो कि हे स्वामी जाबेर तू मोहिंछांड़ि सीधौलैन नगरमें जातुहै वासमयहौं अकेली रहतिहौं। याते यह लूलोमालीको टहलुआहै औ आछोगावतु

है याहि संगलीजै तो मेरेनिकट रह्योकरैगो। उनकही प्रियेएक तौ गैलमें आपनी देह निबाहनी कठिन है दूजे या पंगुको कैसे लै चलैंगे। इन कही स्वामी एकपिटारो आनिदेउ। तामें राखि याहि हौं निजमूड़पै आछीभांति लै चलिहौं। तुम या बात की चिन्ता जिनकरो यहसुनि उनपिटारो आनिदियो। इन वाहिमें राखि शिरधरिलियो आगे एकबनमें जाय ब्राह्मणीने निज मन माहिं बिचाखो कि यह ब्राह्मण जबलौं रहैगो तबलौं हौं या पंगु सों निर्भयहोय भोग न करसकौंगी। ऐसे बिचारि समयपायबि-प्रको कूपमें डारि पंगुको पिटारो शिरले ज्यों एकनगरमें बढ़ी त्यों राजाके सेवक याहि पकरि नगरपतिपै लैगये। उन पिटारो खु-लवाय पंगुको देखि कह्यो यह कोहै इनकह्यो महाराज यह मेरोपतिहै। याके शत्रुनके भयते आपनेमूड़पै लिये डोलतिहौं। अब तिहारी शरण आनिलईहै। जैसोजानौ तैसोकरौ। राजा कही तू मेरेनगरमें रहि। हौं तेरी आंजीविका करदेतुहौं। तेरो शत्रुआवै तो मोसे कहियो। इतनोकहि राजाने गाँव २ में वाकी चुंगीकरदई। वह वाहिलै वहां सुखसों रहनलागी। आगे दईके योग कोऊ बनजारो वा बनमें आय निकस्यो ताने वा ब्राह्मण को कुआँसों काढ़्यो। कह्योहै जु आयु न पूरीहोय तो बाघबैरी अग्नि जलहूके मुखते बचै पुनि वह ब्राह्मण वाहीनगरमें आयो जहां ब्राह्मणीही। जब ब्राह्मणीने अपनोपति देख्यो तबउनराजा सों जायकह्यो महाराज मेरेस्वामीको रिपूआयो। यहसुनिराजा ने वाहि पकरि मँगायौ अरुकह्यो रेबिप्र तू याहिक्यों दुःखदेतुहै औकहामांगतुहै ऐसीबातराजाके मुखतेसुनि ब्राह्मणने निजमन में बिचाखो किजो इनहीं मेरी ममता त्यागी तो मोकोहू याकी प्रीतितजनीउचितहै। क्योंकि मनटूटोफिर नमिलै जों फटिकको पात्र। ऐसे बिचारि ब्राह्मण ने राजासों कही किपृथ्वीनाथहौंयाते नकछु मांगों न कहौं पर मेरी यापै आधीआयुहै सोदिवायदेव। राजाब्राह्मणकीबातभूठसमभचुपहैरह्योअरु ब्राह्मणी आगलोभे-

द नैं जान बोलउठी कि धर्मावतार जाभांति यहकहै तारीतिसौंया की आयुर्बलदेउँ।बहुरि बिप्र बोल्यो हाथ पाँयधोय आचमनकर पबित्रहोय ऐसेकह कि मैंतेरी आयुलईही सो पाछीदई उन वैसेही कह्यो।औकहतही वाको प्राणघटते निकरिगयौ राजासभासहित देखिभयचकरह्यो। पुनि वाको भेद पूंछयो तबब्राह्मणने सबभेद कहयो।या बातके सुनतेही राजाने ब्राह्मणको बिदाकियो अरुआप नियम लियौ किनारी की बात कबहूं सांची न मानिये। ताते हौं कहतहौं अरे मूर्ख जलचर स्त्रीकी बातको बिश्वास कबहूं न करिये कह्यो है जो नारीके बशपरे सो कहा न करै जैसे राजाभोज औ पांड़े बररुचि कियो। मगरपूंछीयह कैसीकथाहै तहांबानरकहतुहै॥

एकसमय रात्रिको राजा भोजकी रानी राजासों रिसानी तब उन अनेक उपाय मनायबेको किये पर वाने याकी बात क्यों हूं न मानी औ कह्यो जो तुम घोड़ाबनि मोहिं चढ़ाय आंगनमें लै फिरौ अरु हौं ऐंड़करि चाबुक चटकाऊँ तौ तिहारो गायौगाऊं। उन सुनि वैसेही करि आपनो मनोरथ साध्यौ। औवाही रात्रि पांड़ेकी पँड़ियाँइनिहूं रूठी। तबपाँड़ेने कही तूकाहूभांतिहू हठ छोड़े। उनिकही तुम मेरोअपराधी हौ। याते तोहिं भद्रकरौं तो मेरो क्रोधमिटे। कह्योहै जो अति चतुरहोय सो रसरीति समझ प्रीतिके बशपरै। आगे पांड़ेने दाढ़ी मूछ औ मूड़मुड़वायो औ वाको गायो गायो। भोरभये जब राजा सभामें आयबैठ्यो तब पांड़ेने जाय आशीशदई। उन याहिदेखिहँसकै कहीअहो बिप्र बिनपर्ब भद्र कहांभये। इन बिद्याके बल रातकी बात बिचार कह्यो। महाराज जहां मनुष्य घोड़ाकी भांतिहींसे तहां बिन पर्वहू मुंडनहोय। यह सुनि राजा मौनगहि रह्यो। ताते हौं कहतहौं अरे दुष्ट जलचर जैसे राजा औ पांड़ेने कियो तैसे तूहूं कामांधहोय स्त्रीके बशभयो वेदोऊऐसेबतराय रहेहे कि वाहीसमय एक जलचरने आय मगर सों कही भाई तेरीस्त्रीमारेक्रोध के मरबेको ह्वैरही है अरु घरमें तेरेएक और मगर आयरह्यो है

यह सुनि मगर दुःखपाय बोल्यो हाय मैं अभागे यह कहा कियो जुऐसी दुष्टपत्नी के कहे आपनों धर्म कर्म खोयदियो .पुनि उनि बानरसों कह्यो कि मित्र तू मेरो अपराध क्षमाकर क्योंकि मैं अब या दुःखते प्राण छांड़िहों । बानरबोल्यो अरे मूर्ख तेरेघरमें बिगार होनों तौ युक्त होही। परतोहिं ऐसीं दुष्टस्त्रीके गये उछाह करनों योग्यहै । क्योंकि कह्यो है कलहकारनी नारी औ विष विपत्तिकी जरहै। याते जो आपनी आत्माको सुखचाहै सो वासों विरक्तरहै.तौहीभलो। वाके मनमाने सो कहै औ करै । नारीन के चरित्र भांति-भांतिके हैं । ते कहांलों कहौं परतू येतीही बात में जानियो कि जे चतुर औ सज्ञान हैं ते तिनके आधीन कबहूं नहोंयगे। मगर कहीअहो मोते द्वै चूकभई। ताहीते इतमित्राई गई। औ उतस्त्री जैसे एकनारीको जारभयो न भर्त्तार। बानर कही यह कैसी कथाहै। तहां मगर कहतुहै॥

एक किसानकी स्त्री तरुणि औ वह बूढ़ो फूस। ताते वाको मनोरथ पूजि न सकै यह नितप्रति परपुरुष हेर्योकरै औ काम के मारे याको मन धाममें न लागै उदास रहै। एक दिन कोऊ पराये बित्तचित्तको चोरयाहि आनिमिल्यो वासोंइनकही हेशुभलक्षणमेरो पति बूढ़ोह्वै रह्यो है जोतू मेरो जारहोय तो मैंघरकी द्रव्यलै तेरेसंगचलौं। उनकही तैं नीकी बिचारी। भलो मैं होउँगो। इनकही तौ तू सकारे आइयो। हौं तेरेसाथ चलोंगी। आगे भोरभयो वहआयो औ वाहिबित्त समेतलै नगरके बाहरको पायो। कोस एक जायमनमें बिचार करनि लाग्यो कि यहएक तौयौबनवती दूजे याहि परपुरुषकी इच्छाहै। कदाचित् जैसे यह मोहिं मिली तैसे काहू और सों मिलजाय तोफेर मैं कहा करोंगो यह बिचारि एकनदीकेतीर जायबोल्यो भद्रे प्रथम नदी पार वित्त वस्त्र धरिआऊँ। पाछे पीठपर चढ़ाय तोहिं लैजाऊँगो वाने. याबात के सुनतही बसन आभूषणकी गठरी दई। इनलै पारहोय आपनी बाटलई सोलई। व्यभिचारिणी

नदीतीर पछताय नीचीनार किये बैठरहीही कि एक स्यारनी मांसको लोथरालिये तहां आई । अरुएक माछरीहू पानीतेनिकरि रेतपर बैठीही । वाहि देखि स्यारनी लोथराधरि माछरी पकरबेको दौरी । इतमांस चील्ह लैगई औ उत माछरी याहिदेखि जलमेंकूदी । जब स्यारनी निराशहोय चील्हकीओर तकनि लागी तब ब्यभिचारिणी बोली कि दोऊगवांय अब कहादेखति है । उनकही एकतो हौं चतुर अरु मोहूंतेढूनीतू जुतेरो सर्वस्व गयो औ न जारभयो न भर्तार । इतनी कथाकहि मगर बोल्यो भाई मेरीहू वहीदशाहै पर अब कौन उपायकरौं नीति में तो कार्य साधबेको चार उपाय कहे हैं साम, दाम, दण्ड, भेद अब इनमें ते मोहिं जो करनो योग्यहोय सो कहो । बानरकही अरे मूढ़को उपदेश कबहूं न दीजै । बहुरि मगर बोल्यो मित्रहौंशोक समुद्र में बूड़तहौं तू मोहिं काढ़ । तोहिं यशधर्म होयगो । कह्यो है जो मूर्ख कार्य बिगारै तोहू चतुर सुधारिलेय । मैंमूढ़ तू चतुर तांते जामें मेरो भलोहोयसो युक्तिबताय । वांकी दीनतादेखि बनचर बोल्यो भाई तू आपने घरजा औ सजाती सों युद्धकर । क्योंकि जो जीतिहै तौ घरपायहै औ मरिहै तो स्वर्ग । कह्योहै उत्तमजनसों सामउपाय कीजै । मनुहारकरि कार्यलीजै । अरु अति बलवान्को धनदै दामउपायकरि आपनो कार्य सवांरिये पुनि दुष्टते दंडउपायकै अपनपो राखिये । बहुरि समानसों भेद उपाय करि वाहि छलबल करि मारि नाखिये जैसे एक स्यारने कियो । मगर कही यह कैसी कथा है पुनि बानरकहतुहै ॥

काहूस्यारने बनमें एक मर्यो हाथी पायो परवाको कठिन चामयाते काट्यो न गयो । त्योंहीं एकसिंह आयो । यहदेखतेही वाके सन्मुख उठिधायो औ हाथजोर बोल्यो स्वामी या गजको आप अंगीकारकीजै उनकहीहौं काहूको मार्योखातुनाहीं मेरो यह धर्महै याते यह मैं तोहीं को दियो । इतनी कहि वहचल्यो गयो । पुनिएक तेंदुआ आयो । वाहिदेखिस्यारनेजी में बिचार्यो

कि यह दुष्ट है याको भेद उपाय करिडराइये । ऐसे मनमें ठानि यह वाके सन्मुख जाय गुमानसों हितू होयबोल्यो अहो यहां कहां आवतुहो। यह गजसिंह मारि मोहिं याकी रखवारी राखिकै गंगान्हायगयो है। ज्योंहीं बघेला ने याकी बातसुनी अरु वाके चरण चिह्न देखे त्योंहीं पीठदई। इतेकमें एक चीताआयो। ताहि निहारि जंबुक ने बिचारयो जु यासों हाथी को चामफड़वालीजे तो भलो। ऐसे विचारि इन चीतासों कह्यो अहो भगिनीसुत मैं तोहिं अनेक दिन पाछे देख्यो। जो भूख्यो है तो यह गज सिंह मारि नदीनहैबे को गयो है जौलौं वह आवे तौलौं कलेवा करि चल्योजा। उन कही मामाहौं आपनौं मांसराखो तो लाखसिंह को माखो गजकैसे खाऊं। तब स्यार बोल्यो अरे हौंयाको रखवारोहौं औ तेरे आड़े ठाढ़ौरहतुहौंतूखा। जब सिंह आवेगोमैंपुकारोंगो तब तू भाग जैयो। उन याकीबातमानिज्यों हीं वाकी खालफारि कछु मांस मुखमेंलियो त्योंहींस्यारपुकाखो अरेभागसिंह आयो। यह सुनतप्रमाण वह उठिदौखो। याभांति स्यारनेवासों दाम उपायकरि निजकार्यसाध्यो। आगेसजातीन्सों दण्डउपायकरि युद्धकियो। अरु वह हाथीकाहूकों नखान दियो तातेंहौं कहतुहौं किसामदाम दण्डभेद चार उपायकहेहैं। पर जैसो जहां बूझिये तैसो तहां करिये। बहुरि मगर कहीहौं विदेश जैहौं। बंदरबोल्यो॥

अरे एक चित्रांगदनाम कूकरपरदेशमें जाय काहूगृहस्थके घरपैठ्यो। औआछोआछोखाय जब बाहरआयो तब वा गावँके श्वाननिवाहिघरअतिमारदई पुनि इनदुःखपाय नि जनगरकी बाटलई अरु घरआयो। तद्याके कुटुंबने पूंछयो कि बिदेश जैबे की अवस्था कहो जुवहां कैसेरहे। इनकही परदेशमें और तो सबभलो परसजाती देख नाहिं सकतु। जो कोऊमोसों पूंछे तो मेरे जानघरतें निकसनो उचितक्योंहूं नाहीं। अरेमगर तातेहौं कहतुहौं कि तेरीदुष्ट पत्नी तो गई पैतू अबहींसकामहै। याते

नयो ब्याहकर। कह्योहै कुआंकोनीर बड़कीछांह तुरतबिलोयो घ्री खीरको भोजन बाल स्त्री ये सबप्राणको पोषतुहैं। अरु अवस्था प्रमाणकार्यकीजै तो दोष नाहीं। बानरते यह उपदेशसुनि मगर निजघरगयो औ उन नयाविवाह कियो घर माड़्यौसब दुःखछांड़्यो आनन्दसौंरहनिलाग्यो। इतनी कथासंपूर्णकरि विष्णुशर्मानें राजपुत्रनको अशीशदई कि तिहारीजयहोयऔ शत्रुनकीहार। यह सुनि राजपुत्रनहू वस्त्रआभूषण द्रव्यमँगाय भेंटधरि पायँलाग गुरूको विदाकियो अरु आपनीतिमार्ग सों निजराज काज करनि लागे॥

कठिन शब्दों का कोष ॥

ना० = नाम, वि० नाम = विशेषनाम, पु० = पुल्लिंग, स्त्री = स्त्रीलिंग, वि० = विशेषण, अ० = अव्यय, स० नाम = सर्वनाम, गु०वा० = गुणवाचक ॥

(अ.)

अवदीच, वि० ना० पु० उपनाम
अजर, वि० पु० जो बूढ़ा न होय
अमर, वि० पु० जो मरै नहीं
अयोग्य, वि० जो लायक न होय
अनित्य, वि० जो हमेशह न रहे
अनमिल, गु०वा० जो मिला न होय
अशक्ति, गु० वा० जिस्में बल न होय
अजानबाहु, गु० बा० जिनकी भुजागांठ तक लागै
अन्तर, वि० फ़रक़, भेद
अप्रिय, गु० बा० जो प्यारा न होय
असन्तोषी, गु०बा० जिस्को सबरनहोय
असाहसी, गु० बा० जिस्में साहसनहोय
अवपावनी, गु० बा० स्त्री० जो किसीने न पाई होय
अधवर, वि०अधूरा, बीचोबीच
असाधु, गु० बा० जो अच्छा न होय
अवज्ञा, गु० वा० अनादर
अहार, वि० ना० पु० भोजन
अकुलीन, गु०वा०जो कुलमें कमहोय
असमय, गु० वा० वक्तखराव
अल्प, वि० थोड़ा
अहंकार, गु० बा० घमण्ड
अपमान, गु० बा० वेइज्जत, निरादर
अनत, गु० बा० दूसरी जगह
अस्त्र, वि० ना० पु० हथियार
अभिलाषा, वि० ना० स्त्री० इच्छा, मनसा
असावधान, गु० वा० बेहोश, बेख़बर
अखण्ड, गु० बा० जिस्के टुकड़ेनहोयँ
अथ, अ० इस्केपीछे
अनागत, गु० बा० नहीं आया
असमर्थ, गु० बा० बेज़ोर, नाताक़त
अनभुई, वि० जो कभी नहींहुई होय
अनर्थ, गु० बा० बुरा, बेवाजिब
अभयदान, क्रि० वि० डर छुड़ादेना
अधीरं, गु० बा० मूर्ख, जिसमेंधीरनहोय
अभागे, गु० बा० कम्बख्तबुरेनसीब के आदमी को कहते हैं
अम्बरीच, वि०बा०पु० राजा अम्बरीष का नाम है
अधम, गु० बा० नीच
अस्थिर, गु० बा० नहीं ठहरा हुआ
अश्वमेध, वि० नाम पु० यज्ञका नाम है जिसमें घोड़े का बलिदानहोय
अतिथिधर्म, गु० बा० महिमानी
अहो, अ० विस्मयादि बोधक
अवध्य, गु० बा० जो मारा न जाय
अगरौ, गु० बा० पहिला
अटपटाना, क्रि० भुलाजाना, कठिनता
अट्टप्पनर, गु० बा० छिपाहुआ मनुष्य
अनअवसर, वि० बेमौक़ा
अनसावना, गु० बा० उखतानों

अनगैरी, दूसरघरका, गैरशख्स
अनहित, गु० बा० जिसके मित्रनहोय अर्थात् वे मुहब्बत
अमबीण, गु० बा० जो चतुर न होय
अभाग्य, गु० बा० बुरानसीब
अविवेकता, बि० अज्ञानता
असन्तान, जिसके औलाद न होय
अमकट, जो ज़ाहिर न होय

[आ]

आसरो, क्रि० वि० सहारा
आपदा, ना० स्त्री० आपत्य, दुःख
आगम, ना० पु० कानूनशास्त्र, क़ायदा
आश्रम, ना० पु० स्थान
आदित्य ना० पु० सूर्य्यकानाम
आलिंगन, क्रि० मिलना
आत्मद्रोही, वि० जो अपनाबुराचाहे
आभरण, ना० गहना, जेवर
आभरण, क्रि० ढकना
आगता स्वागता, गु० बा० आये हुये का आदर करना
आलस्य,गु०बा० अलसाजाना, सुस्ती
आहट, ना० शब्द होना
आचार्य्य, ना० महंत कर्मकरानेवाला
आकाशवाणी, ना० जो आसमान से शब्द निकले
आत्मामिष, प्राणरक्षाके निमित्त सर्वस्वदेना
आपस्वार्थी, गु०बा०मतलबी,खुदगर्जी
आधार, क्रि० वि० सहारा
आगलो, गु० बा० आगेका, पहिलेका

[इ]

इत्तेक, स० ना० इतना
इन्द्रियन, ना० बा० इन्द्रियां
इकल्लो, भा० बा० अकेला
इहिं, स० ना यह.

[ई]

ईंदुर, ना०बा० चूहा

(उ)

उजागर, ना० पु० प्रकाशकरना
उच्चपद, गु० बा० ऊंचादर्जा
उपाधि, ना० झगड़ा
उदयाचल, वि० ना०पु०पर्वतकानाम
उर, बि० ना० पु० हृदय
उपकारार्थ,गु० बा० बिरानेकामकेलिये
उलट, क्रि० लौटना, पलटना
उपायक, गु० बा० तदबीरकरनेवाला
उन्मत्त, गु० बा० मतवाला
उपस्थित, गु० बा० मौजूद
उपन्यास, क्रि० बा० रखना
उपग्रह, क्रि० ना० लेना
उच्छिन्न, गु० बा० कटा
उत, अ० उधर
उतावली, गु० बा० जल्दी
उत्कंठित, क्रि० बा० जिस्कोचाहहोय
उत्पन्नमति, गु० बा० बुद्धिमान्
उत्साह, ना० बा० पु० आनन्द
उद्योत, क्रि० बा० उदय होना
उपहार, ना० बा० भेट
उल्लंघनो, क्रि० बा० नांघना

[ऋ]

ऋण, ना० बा० उधार

[ए]

एकान्त, ना० अकेला
एकमति, गु० बा० एक सलाह

[ओ]

ओछी, गु० कम

[औ]

औगुण, गु० बा० बुराई, दोष
औषध, ना० बा० दवाई

[क]

कृपानिधान, गु० बा० मेहरवान
कबि, ना० बा० शायर
कपार, ना० बा० माथा
कांचन, ना० बा० सोना
कुपात्र, गु० बा० बुरा
कीट, ना० बा० कीड़ा
काव्य, भा० बा० शायरी
कलह, ना० बा० झगड़ा
कपोत, ना० बा० कबूतर
कौतुक, ना० बा० खेल
कंकण, ना० बा० हाथका गहना
कंटक, ना०बा० पु० कांटा
कुशल, गु० बा० अच्छा
काष्ठा, ना० बा० नियम, दिशा
कनक, ना० बा० सोना, सुवर्ण
कथ, क्रि० बा० कहकर
कुदृष्टि, गु० बा० बुरीनज़र
कामातुर, स० ना० कामी
कामान्ध, स० ना० काममेंअन्धाहोर हाहो
क्रीड़ा, ना० बा० खेल
कलंक, ना० बा० ऐब
कदाचित्, अ० कभी, अगर
कंदर्पकेतु, बि० ना० मनुष्य का नाम है
कटु, गु० बा० कड़ुवा
कुबेला, गु० बा० बुरासमय
कूकड़ो, ना० बा० कुत्ता
कौशुंबी ना० बा० नगर का नाम है

[ख]

खटकति, क्रि० बा० खटकता
खोड़र, ना० बा० बिलको कहते हैं
खनानो, क्रि० बा० खोदना
खवानो, ना० बा० खिलाना

[ग]

गजमुख, ना० बा० देवका नाम है
गणईश, वि० ना० देवकानाम है
ग्रन्थ, ना० बा० पुस्तकोंको कहते हैं
गीलकृत, ना० बा० उपनाम है
गुणनिधान, गु० बा० गुणकी जगह
गुप्त, वि० छिपा, पोशीदह
गृहकूप, वि० ना० घरका कुआं
गूढ़, गु० बा० कठिन
गांठ, ना० बा० गिरह
गवांर, ना० जोगविमिरहे, निर्बुद्धिहों
गृध्रकूट, ना० बा० पहाड़ का नाम है
गम्भीर, गु० बा० गहरा
गयन्द, ना० बा० गैन्द
गृहस्थाश्रम, ना० बा० गृहस्थी
गन्धमादन, ना० बा० पर्वतका नामहै
गम्य, गु० बा० जानेकेयोग्य
गर्दभ, ना० गधा
गार, ना० बा० गड़हा
गारुड़, ना० बा०जोसर्पोंका मंत्र जाने
गुननो, क्रि० वि० बिचारकरना
गुरुभाई, गु० बा० जो अपने गुरुका लड़का शिष्य होय
गुह्य, गु० बा० छिपाहुआ
गृहछिद्र, गु० बा० घरकाभेद
गौतमारण्य, गौतमऋषिकाबन

[घ]

घात, ना० बा० मौकामारना
घृत, ना० बा० घी
घटनो, क्रि० बा० कमहोना
घालनी, क्रि० बा० मिलाना
घुमड़नी, क्रि० बा० फिर आना
घुसायन, क्रि० बा० घुसना
घोंसुआ, ना० बा० घोंसला

[च]

चतुर, वि० होशियार
चिन्ता, ना० बा० फिक्र
चित्रग्रीव, ना० बा० एककबूतरकानाम
चिथायकरि, क्रि०वि० चोंचोंकर
चेष्टा, ना० बा० सूरत, नजर
चिरंजीवि० आशीर्वाद, हमेशा रहै
चांद्रायण, ना० बा० एकमहीनेकाव्रत
चन्द्रभागा, ना० बा० नामहै नदीका
चम्पावर्णी, गु० बा० चम्पाकासावदन
चपलाई, गु० बा० तेजी
चाणक, ना० बा० ग्रन्थका नामहै
चिचानों, ना० बा० चींचीं करना
चित्रांगद, ना० बा० गन्धर्बका नामहै कूकरका नाम
चूड़ाकरण, ना० बा० मुंडननाम
चारुदन्त, गु० बा० सुन्दरदांत

[छ]

छांड़ि, क्रि० बा० छोड़ना
छौनानि, ना० बा० बच्चे
छलछिद्र, ना० बा० कपट
छिन्न, गु० बा० कटा
छैगुण, गु० बा० छैगुना
छांड़नो, क्रि० बा० छोड़ना
छानो, क्रि० बा० याचना

[ज]

जड़, वि० पु० मूर्ख
जन्म, ना० बा० जनम
जोग, ना० बा० फ़क़ीरी
ज्योतिष, ना० बा० एकविद्याकानाम
जलचर, ना० बा० जलकाजीव
याचक, गु० बा० मांगनेवाला
जम्बु, ना० बा० गदिड़
जम्बुकेत, ना० बा० एकजानवरकानाम
जलकुण्ड, बि० ना० तालाब

[झ]

झलना, क्रि० बा० टसहना

[ट]

टेलर, बि० ना० पु० साहिबकानामहै
टरतनटारे, क्रि० बा० हटायेन हटे
टेरनो, क्रि० बा० बुलाना
टिटोर, क्रि० बा० टटोलना, टटीरीकानर

[ठ]

ठाम, ना० बा० जगह
ठिठको, क्रि० बा० रुकना
ठानि, क्रि० वि० विचारकर

[ड]

डोकरा, भा० बा० बूढ़ा
डरन्यो, क्रि० बा० डरना
डहडहेउ, गु० बा० हराभरा

[ढ]

ढारनो, क्रि० बा० ढालना
ढिग, गु० बा० पास

[त]

तेजस्वी, गु० बा० प्रतापी
तृपावन्त, गु० बा० प्यासा
तृण, ना० बा० तिनुका
तद, अ० तब
तरुण, गु० बा० जवान
त्यागत, क्रि० बा० छोड़ना
तुंग, गु० बा० ऊंचा
तरंग, ना० बा० लहर
तुष्ट, गु० बा० सन्तोषी
तिरस्कार, गु० बा० अनादर
तत्काल, अ० उस समय
तपोवन, गु० बा० तपकी जगह
तितेक, स० बा० तितने

तिस,स० ना० तिसे
तुंगबल, गु० बा० ऊँचाईकाबल
तुल्य, ना० बा० बराबर

[थ]

थांभ, क्रि० बा० रोकना
थमानो, क्रि० बा० थमाना, देना

[द]

दाता, गु० बा० देनेवाला
दाहक, गु० जलानेवाला
दयासागर, गु० बा० दयाकासमुद्र
देनहारी, गु० बा० देनेवाली
दृढ़, गु० बा० मज़बूत
दसेर, क्रि० बा० देवे
दुराचारी, गु० बदचलन
दहदल, ना० बा० कीचड़
दुरदिन, गु० बा० मेहबर्षनेका दिन
द्रव्यहीन, गु० बा० दरिद्री
दामिनी, ना० बा० बिजली
दमक, क्रि० बा० चमकना
दूरदर्शी, गु० बा० दूरन्देश
दिग्विजय, दिशाओंका जीतना
दण्डकारण्य, ना० बा० दण्डकबन
दण्डकनो,
दपटनो, क्रि० बा० धमकना
दिनेकटी, क्रि० बा० दिन काटना
दुर्दन्त, गु० बा० बड़ेदांत

[ध]

धीमान्, गु० बा० बुद्धिमान्
धर्मार्थ, बि० धर्मकाकाम
धूर्त, गु० बा० मूर्ख, ज़िद्दी
धनाढ्य, गु० बा० धनवान
धनान्ध, गु० बा० धनसे अन्धाहोरहा हो, अभिमानी
धरानो, क्रि० बा० धरवाना

धर्मारण्य, ना० बा० धर्मबन्
ध्वनि, ना० बा० धौंकनी
धूसर, ना० बा० धूम्रवर्ण

(न)

निपट, गु० बा० बिलकुल
निपुण, गु० बा० प्रवीण, चतुर
नवौनवौ, गु० बा० नया नया
नीतिमार्ग, गु० बा० नीतिका रास्ता
नान्हें, गु० बा० छोटा
निरन्तर, स० ना० जल्दी
नख, ना० बा० नोह
निन्दा, ना० बा० बुराई
निमित्त०, ना० बा० वास्ते
नितमाति, ना० बा० हररोज़ अ०
निदान, अ० आखिर
नरपति, ना० बा० राजा
नासिका, ना० बा० नाक.
निश्चिन्त, बि० छुट्टी पाया, बेचिन्त
निकट, गु० बा० पास
निन्दक, क्रि० बि० बुराईकरनेवाला
नग्नता, भा० बा० नंगापन
नरनाह, ना० बा० राजा, सर्दार
नरेन्द्र, ना० बा० राजा
नाखनो, क्रि० बा० डाला
नाटा, बि० जिस्के कोई न होय
निकटवर्ती, बि० पास रहनेवाला
निरादर, गु० बा० जिस्का आदर न होय
निर्लोभ, गु० बा० जिस्के लोभ न होय
नोठ, गु० बा० बिगड़ जाना
न्योर, गु० बा० बिनती
नरहटी, ना० बा० गर्दन

[प]

प्रतापी, गु० बा० तेजस्वी
प्रजापालक, गु० बा० प्रजाका पालने वाला, राजा

प्रवीण, गु० बा० चतुर
प्रथम, गु० बा० सं० पहिला
प्रतिष्ठा, ना० बा० इज्जत
प्रवेश, क्रि० बा० घुसना, पैठना
पात्र, ना० बा० बर्तन
प्रकार, अ० तरह
प्रीति, ना० बा० सनेह
पुण्यवान्, गु० बा० पुण्यकरनेवाला
प्रकाशै, जो दीखे
प्रभुता, भा० बा० हुकूमत
पुरुषार्थ, ना० बा० ताक़त
प्रेरे, क्रि० बा० आज्ञाकरना
पुहुप, ना० बा० फूल
परसे, क्रि० बा० छुओ
परम, अ० ज्यादा
पथिक, ना० बा० मुसाफिर
प्रातःस्नान, ना० बा० सबेरेकानहाना
प्रतीति, ना० बा० निश्चय
पाखंडी, ना० बा० जो पाखण्डकरै
पथ्य, ना० बा० औषध वा परहेज
प्रयोग, ना० बा० नियम
पराक्रम, ना० बा० ताक़त
प्रभाकर, ना० बा० सूर्य्य
पालन, क्रि० बि० परवरिश
पवित्र, गु० बा० साफ़, मुतबर्रिक
परमार्थ, ना० बा० जो दूसरे के लिये उपकार
परम्पराय, गु० बा० हमेशः से
प्रमाण, ना० बा० अन्दाज
प्रार्थना, ना० बा० विनती
परिश्रम, ना० बा० मेहनत
प्रधान, गु० बा० मुख्य अफ़सर
पगार, ना० बा० महल
प्रतिबिम्ब, ना० बा० परछाहीं
प्राचीन, ना० बा० पुराना
पौरियन, ना० बा० द्वारपर रहनेवाले
पत्नी, ना० बा० स्त्री
परक्रिया, समास दूसरे की क्रिया
पुष्ट, गु० बा० मोटा
पड़ियान, ना० बा० पंडित की स्त्री
पद्मकेलि, ना० बा०
परदूषण, स० दूसरे का ऐब
पुरुषान्तर, अपने योधाओं को साथ लेकर मिले इससान्धिको कहते हैं
प्रतीकार, ना० बा० बदला

[फ]

फड़वानो, फड़वाना
फुरनो, क्रि० बा० सत्यहोना
फुल्लोत्पल, यो० बा० फूलाहुआकमल

[ब]

ब्रजभाषा, ना० बा० ब्रज की बोली
बखानत, क्रि बा० बखान करना
ब्योहार, ना० बा० व्यवहार
बिद्यारूपी, गु० बा० इल्मकी सूरत
बृद्ध, ना० बा० बूढ़ा
बिग्रह, ना० बा० लड़ाई
बांझ, ना० बा० जिस स्त्रीके संतान न होय
ब्रत, ना० बा० एक प्रकारकानियम
बित्त, ना० बा० धन
ब्याधि, ना० बा० बीमारी
बृहस्पति, बि० ना० देवताओंके गुरू
बिशेष, गु० बा० अधिक मुख्य
बिलाव, बि० ना० बिल्ली
बिलूरवे, ना० बा० पु० मूसा, चूहा
बिनती, गु० बा० नम्रता, आजिजी
बटोही, ना० बा० राह चलनेवाला
बिप्र, ना० बा० जातिकानाम ब्राह्मण
बध्यो, क्रि, बा० मारना
ब्रह्मचर्य्य, गु, बा० बेदकाआचरण

बंधन, ना० वा० कैद
बसीठ, ना० वा० मंत्री
बंदरा, ना० वा० बंदरका बहुबचन
बहुत बंदर
बंधु, गु० वा० भाई
बगर, ना० वा० बगल
बठवार, ना० वा० बढ़वार
बिरुद्ध, भा० वा० झगड़ा
बसन, गु० वा० शौक

[भ]

भागवान, गु० वा० नसीबेवर
भाषत, क्रि० द्यौ० कहताहुआ
भांति, गु० वा० तरह
भृंग, ना० वा० पक्षी विशेष
भक्षण, क्रि० वा० खाना
भविष्य, का०वा० आनेवालासमय
भार, ना० वा० बोझा
भिक्षा, ना० वा० भीखमांगना
भर्त्तार, गु० वा० स्वामी
भिक्षुक, गु० वा० भिखारी
भोजनार्थ, सं० का० खानेकेलिये
भिन्न, गु० वा० जुदा
भेदी, गु० वा० जासूस

[म]

महाराजाधिराज, गु० वा० शाहंशाह
मारकिस, गु० वा० उपनाम
मति, ना० वा० समझ
मंद, गु० वा० निर्बुद्धि
महाजन, वि० ना० उपनाम
मर्य्यादा ना० मर्याद
मर्कत, ना० रत्नका नाम है
माणिमाणिक, ना० रत्नका नामहै
महिमा, ना० माहात्म्य
मृग, ना० वा० हरिण
मनोरथ, ना० मनकी चाह

मृतक, गु० वा० मुर्दा
मादकता, भा० वा० नशहकीअवस्था
मर्म, ना० भेद
मयूर, ना० मोर
मस्तक, ना० माथा
मिस, ना० वा० बहाना
मर्कट, ना० बन्दर
मर्दन, धा० वा० मलना
मन्थरक, गु० वा० सुस्त
मदोत्कट, ना० वा० एकसिंह विशेष
घमण्डी
मुनीश्वर, ना० वा० मुनिश्रेष्ठ

[य]

युद्ध, ना० वा० लड़ाई
युक्ति, ना० वा० तद्बीर
यथायोग्य, क्रि० वि० जैसाचाहिये
यत्न, ना० वा० इलाज
यद्यपि, अ० अगर
यूथपति, ना० वा० झुण्डकामालिक
यद्भविष्य, गु० वा० होनहार
युधिष्ठिर, ना० वा० राजाकानाम

[र]

रसमूल, ना० वा० रसकीजड़
रंजन, ना० वा० पु० आनन्द
रमनों, ना० वा० रमना
रोष, ना० वा० ईर्षा
रुक्मांगद, वि० ना० सुनहरीभुजा का
रस, ना० वा० पु० जल

[ल]

लक्षण, ना० वा० चिह्न
लखानों, धा० वा० देखपड़ना
लघुपतनक, वि० ना० कौवेकानाम
लहनों, ना० वा० लेना
लांबा, गु० वा० लम्बा

लाजवन्ती, गु० वा० स्त्री शर्मवाली
लार, ना० वा० थूक
लावण्यवती, गु० वा० स्वरूपवालीस्त्री
लीलावती, ना० वा० स्त्री खेलकरने वाली
लूअ, ना० वा० गर्महवा
लौठिया, ना० वा० लकड़ी
ल्यानो, ना० वा० लाना
ल्यावनो, ना० वा० लाना

[व]

व्यासमुनि, ना० वा० नामहै मुनिका
विष्णुशर्मा, ना० वा० नामहैमनुष्यका
विश्राम, क्रि० वा० बैठना,सुस्ताना
विप्र, ना० वा० ब्राह्मण
विश्वास, ना० वा० भरोसा
वधिक, क्रि० वा० शिकारमारनेवाला
वर्त्तमान, क्रि० वा० मौजूद
विसारदे, वि० क्रि० भुलादेना
वत्सल, गु० वा० प्यारा
व्याकुल, भा० वा० घबराहट
व्यभिचारी, ना० वा० बुराकामकरने वाला
विलम्ब, गु० वा० देरी
वृथा, गु० वा० बेफ़ायदे
वियोग, ना० वा० क्रि० वि० अलगहोना
वररुचि, वि० ना० एकपंडितकानाम
वर्जित, क्रि० वा० मने करना
विरुद्ध, ना० वा० बैर
वृद्धापन, भा० वा० बुढ़ापा
विषाद, ना० वा० दुःख

[श]

शम्भुसुत, ना० वा० महादेवके लड़के
शुभचिंतक, गु० वा० अच्छाचीतनेवाला
शृंगार, ना० वा० सिंगार
श्रीवान, गु० वा० लक्ष्मीवान् धनी
शूरता, भा० वा० वीरता
शरणागत, वि०.शरण में आया

[स]

सुरवाणी, वि० देवताओंकी बोली
समतूल, ना० वा० चौड़ाव लम्बावमें एकसा
सुपात्र, गु० वा पु० बहुत योग्य वा अच्छावर्त्तन
सज्जन, गु० वा० पु० अच्छामनुष्य
शूरता, ना० वा० बहादुरी
संयोग, ना० वा० मिलावट
सन्तोष, ना० वा० सबूरी
समाचार, ना० वा० हाल
समीप, ना० वा० निकट व नेरे
सहाय, वि० ना० पु० मदत
साध्यो, ना० वा० बनाया
सुवर्ण, वि० ना० पु० सोना
साक्षात्, अ० हूबहू
संन्यासियन, ना० वा० संन्यासी
संचरनो, ना० वा० चलना
संतुष्ट, गु० वा० पु० जोनबहुतचाहे
सौभाग्यवती, गु० वा० स्त्रीसुहाग वा०
संजीवक, वि० ना० पु० जिलानेवाला
सुपथ, वि० ना० पु० अच्छारास्ता
सपरियै, क्रि० तैयारहोना
सर्वस्व वि० ना० पु० सबधन
साधु,गु० वा० सीधामनुष्य
स्वामिभक्ति, वि० ना० स्त्री० मालिक कीसेवा
सत्यवन्त,गु० वा० पु० सचकहनेवाला
सहगामिनी, वि० ना० स्त्री० साथच लनेवाली
स्वेच्छा, वि० ना० स्त्री० अपने मनकी बात
सुदृष्टि, वि० ना० स्त्री० अच्छीनज़र

संतुष्टता, गु० वा० स्त्री० जिसके होने से मनुष्य कमचाहना करता है
समुद्रान्त, समुद्रतक
सामर्थ्यता, वि० ना० स्त्री० जिससे सब होसके
सात्विकी, गु० वा० पु० सतोगुणी
सुकुमारता, गु० वा स्त्री० सुकुमारी
सुसेवित, वि० ना० पु० जिसकी अच्छी सेवा हो
सुदर्शन, वि० ना० पु० विष्णुजी का हथियार मनुष्यका नाम भी होता है
सुवर्ण, गु० वा० स्त्री जिसका अच्छा रंगहो

[ह]

हीन, वि० ना० पु० कम
हृष्ट, गु० वा० पु० खुश
हेतु, वि० ना० पु० सबब
हिंडोरा, वि० ना० पु० हिंडोला वा हिंडोलना
हिरण्यक, ना० वा० नामहै एकपशुका
हर्षनो, क्रि० वि० प्रसन्नहोना

[क्ष]

क्षुधित, गु० वा० भूखा
क्षमायुक्त, गु० वा० शान्ति सहित, बरदाश्तकरनेवाला, सहनेवाला
क्षमावन्त, गु० वा० शीलवन्त मुआफ़ करनेवाला

[ज्ञ]

ज्ञाता, गु० वा० पण्डित जो सबजानता होय

इति

श्री युत हालसाहब कृत परिभाषा ॥

१ शम्भु —शिवजीका नाम है।
२ सहस्र अवदीच— ये गुजराती ब्राह्मणों का उपनाम है. कि इनलोगों सहस्र अर्थात् हजार पुरुषाओं से सरस्वती — नदीके पश्चिमोत्तर देशों को परित्यागकर गुजरात का निवास अंगीकार किया।
३ कीन या कीनौ अर्थात् कियो या करेउ।
भगवान् हरि वा विष्णु।

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जौलाई सन् १८९४ ई० ॥